प्रेरणा स्रोत
स्व. श्री यशवंतजी घोड़ावत

RNI No. MPHIN/2018/76422

बेबाकी के साथ...सच

माही की गूंज

Www.mahikigunj.in, Email-mahikigunj@gmail.com

सुविचार

जिस युवा के हृदय में राष्ट्र

प्रथम हो, उसके लिए हर संघर्ष सम्मान है और हर बलिदान गौरव।

अमर शहीद चंद्रशेखर आजाद

वर्ष-08, अंक - 43 (साप्ताहिक) खवासा, गुरूवार 13 अगस्त 2026 पृष्ठ-8, मूल्य -5 रुपए

आजादी के 80 वर्ष : क्या खोया... क्या पाया...

माही की गूंज, झाबुआ डेस्क।

संजय भटेवरा

देश अपना 80वाँ स्वतंत्रता दिवस मनाने जा रहा है। आजादी के इन आठ दशकों में देश ने कई उतार चढ़ाव देखे हैं। कई महत्वपूर्ण उपलब्धियां हासिल की है तो कई मोर्चों पर मात भी खाई है। लेकिन विश्व का सबसे बड़ा और मजबूत लोकतंत्र आज सीना तान के खड़ा है तो ये देश के उन करोड़ों लोगों के खून पसीने की कमाई है जिन्होंने देश के निर्माण में अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया है। आज के दिन उन शहीदों को नहीं भूला जा सकता है जिनके बलिदान की कीमत पर हमें ये आजादी मिली हैं। आठ दशक का समय एक लंबा समय होता है और निश्चित रूप से इस लंबे समय में देश ने कई महत्वपूर्ण उपलब्धि हासिल की है। बाबा साहेब अंबेडकर द्वारा बनाए गए संविधान पर चलकर देश ने ऊंच-नीच और जात-पात को पीछे छोड़कर सफलता के नए आयाम स्थापित किए हैं। अभिव्यक्ति की आजादी आज देश की आवाज बन चुकी है। हाल ही में जेन-जी के आंदोलन ने यह दर्शा दिया है कि, सरकार को भी कदम पीछे खींचने पर मजबूत किया जा सकता है। हालांकि आंदोलन से जुड़े कुछ रिल्स देश का सर शर्म से झुकाने वाली भी सामने आई है लेकिन फिर भी युवा शक्ति ने यह साबित कर दिया है कि भारत के लोकतंत्र में कितनी गहराई है।

विकास एक सतत चलने वाली प्रक्रिया है और हर आने वाली सरकार अपनी पिछली सरकार की उपलब्धियां और कार्यों को ही आगे बढ़ाती है। हालांकि उनका तरीका अलग हो सकता है लेकिन अंतत सभी सरकारों का मूल उद्देश्य तो जनकल्याण ही रहता है। स्वस्थ लोकतंत्र पक्ष और विपक्ष रूपी दो पहियों पर चलता है जहां विपक्ष का कार्य पक्ष से ज्यादा महत्वपूर्ण रहता है। इन 80 वर्षों के समग्र विकास पर दृष्टि डाली जाए तो निश्चित रूप से अभी भी आधा गिलास खाली ही है। भारत की आत्मा गांव में बसती है और जब तक इन गांव का समुचित विकास नहीं हो पाता भारत विकसित राष्ट्र की श्रेणी में नहीं आ सकता है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी विकसित भारत 2047 की थीम पर कार्य कर रहे हैं लेकिन उसमें सबसे बड़ा कोई रोडा है तो वह हैं भ्रष्टाचार...!

भ्रष्टाचार रूपी दीमक देश को अंदर से खोखला कर रहा है। देश में भ्रष्टाचार आज शिष्टाचार बन चुका है और देश में अब तक रही सरकारों ने भ्रष्टाचार खत्म करने का दावा तो किया है लेकिन हकीकत यह है कि, देश में भ्रष्टाचार खत्म होने के बजाय बढ़ता ही जा रहा है। यहां कागजों पर अस्पताल, स्कूल और अन्य संस्थाएं चलना आम बात है। कई गांवो में आज भी मूलभूत सुविधाओ का अभाव है। बड़े अधिकारी से लेकर छोटे चपरासी और बाबू तक भ्रष्टाचार की बदौलत लाखों-करोड़ों में खेल रहे हैं। भ्रष्टाचार का आलम यह है कि, करोड़ों की लागत से बनने वाले पुल, सड़के व इमारतें भ्रष्टाचार की कहानी चीख-चीख कर सुनाती है।

आइये हम सब मिलकर इस स्वतंत्रता दिवस पर यह शपथ ले कि, हम भ्रष्टाचार रूपी दानव को जड़ से मिटाने का प्रयास करेंगे और विकसित भारत की दिशा में अपना महत्वपूर्ण योगदान देंगे।

माही की गूंज परिवार की ओर से सभी पाठकों, विज्ञापनदाताओं, संवाददाताओं और देशवासियों को स्वतंत्रता दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं....बधाई..... प्रधान संपादक

जानिए भारतीय ध्वज संहिता के बारे में

माही की गूंज, झाबुआ डेस्क।

हम अपना 80वाँ स्वतंत्रता दिवस मनाने जा रहे हैं देश की आन-बान और शान हमारे राष्ट्रीय ध्वज के लिए भारतीय ध्वज संहिता लागू की गई है। जिसका पालन करना हर भारतीय के लिए आवश्यक और अनिवार्य है इस संहिता को 2002 में लागू किया गया था। भारत का राष्ट्रीय ध्वज, भारत के लोगों की आशाओं और आकांक्षाओं का प्रतिरूप है, राष्ट्रीय गौरव का प्रतीक है। सभी के मार्गदर्शन और हित के लिए भारतीय ध्वज संहिता 2002 में सभी नियमों औपचारिकताओं और निर्देशों को एक साथ लाने का प्रयास किया गया है। ध्वज संहिता भारत के स्थान पर भारतीय ध्वज संहिता 2002 को 26 जनवरी 2002 से लागू किया गया है।

महत्वपूर्ण बिंदु

1. **जब भी ध्वज फहराया जाए तो उसे सम्मान पूर्ण स्थान दिया जाए, उसे ऐसी जगह लगाया जाए जहां से वह स्पष्ट रूप से दिखाई दे।**
2. **शासकीय भवन पर ध्वज रविवार और अन्य छुट्टी के दिनों में भी सूर्योदय से सूर्यास्त तक फहराया जा सकता है। विशेष अवसरों पर इसे रात में भी फहराया जा सकता है बशर्ते प्रर्याप्त रोशनी की व्यवस्था हो।**
3. **ध्वज को सदा स्फूर्ति से फहराया जाता है और धीरे-धीरे आदर पूर्वक उतार जाता है।**
4. **जब ध्वज को किसी भवन की खिडकी, बालकनी या अगले हिस्से से आडा या तिरछा फहराया जाए तो ध्वज को बिगुल की आवाज के साथ ही फहराया और उतार जाता है।**
5. **ध्वज का प्रदर्शन सभा मंच पर किया जाता है तो उसे इस प्रकार फहराया जाएगा कि, वक्ता का मुँह श्रोताओं की ओर हो तो ध्वज उनके दाहिने ओर होना चाहिए।**
6. **ध्वज किसी आधिकारीक गाड़ी पर लगाया जाए तो उसे सामने की ओर बीचो-बीच या कार के दाएं और लगाया जाए।**
7. **फटा या मेला ध्वज नहीं फहराया जाता है।**
8. **ध्वज केवल राष्ट्रीय शोक के अवसर पर ही आधा झुका रहता है।**
9. **किसी दूसरे ध्वज या पताका को राष्ट्रीय ध्वज से ऊंचा या ऊपर नहीं लगाया जाता है न ही बराबर में लगाया जाता है।**
10. **ध्वज पर कुछ भी लिखा या छपा नहीं होना चाहिए।**
11. **जब ध्वज फट जाए या मेला हो जाए तो उसे एकांत में पूरा नष्ट किया जाना चाहिए।**

ध्वजा रोहण और झंडा फहराने में अंतर

स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस पर झंडा फहराने में अंतर है जो ध्वजारोहण और झंडा फहराना कहा जाता है इनके तरीके, नेतृत्वकर्ता और स्थान का भी अंतर होता है। स्वतंत्रता दिवस 15 अगस्त के दिन तिरंगे को पोल के नीचे बांधा जाता है, प्रधानमंत्री इसे रस्सी से खींचकर ऊपर ले जाते हैं और फिर खोलकर फहराते हैं। जिसे ध्वजारोहण कहते हैं यह आजादी मिलने की ऐतिहासिक घटना का प्रतीक है।

गणतंत्र दिवस यानी 26 जनवरी को झंडा पहले से ही पोल के शीर्ष पर बंधा रहता है राष्ट्रपति उसे बिना ऊपर खींची केवल खोलकर फहराते हैं। जिसे ध्वज या झंडा फहराना कहा जाता है यह देश में संविधान लागू होने और पहले से स्वतंत्र होने का प्रतीक है। स्वतंत्रता दिवस पर देश के प्रधानमंत्री दिल्ली के लाल किले से ध्वजारोहण करते हैं और राष्ट्र को संबोधित करते हैं। जबकि गणतंत्र दिवस पर देश के राष्ट्रपति कर्तव्य पद (राजपथ) पर झंडा फहराते हैं और इस दिन भव्य परेड का आयोजन किया जाता है।

राष्ट्रीय ध्वज को उतारते समय इस बात का पूरा ध्यान रखा जाना चाहिए की तिरंगा किसी भी स्थिति में जमीन या फर्श को न छुए। साथ ही फोल्ड करने में ध्वज को इस प्रकार मोड़ा जाना चाहिए जिसमें हरा भाग ऊपर और फिर केसरिया भाग आते हुए अंत में अशोक चक्र ऊपर की तरफ दिखाई दे। क्षतिग्रस्त ध्वज को सार्वजनिक रूप से न छोडते हुए एकांत में पूरी मर्यादा के साथ नष्ट (दफन या सम्मानित तरीके से विसर्जित) किया जाना चाहिए।

वंदे मातरम् अब कानून में, लेकिन देशभक्ति दिल में

स्वतंत्रता दिवस पर नए कानून के बहाने राष्ट्रप्रेम और नागरिक जिम्मेदारी पर विचार

माही की गूंज, झाबुआ।
धर्मेंद्र पंचाल

15 अगस्त, स्वतंत्रता दिवस, केवल कैलेंडर की एक तारीख नहीं है। यह वह दिन है जब भारत अपनी स्वतंत्रता की यात्रा, उसके संघर्ष और उन असंख्य बलिदानों को याद करता है, जिनकी वजह से आज हम एक स्वतंत्र लोकतांत्रिक राष्ट्र के नागरिक हैं। इस वर्ष स्वतंत्रता दिवस पर वंदे मातरम् को कानूनी संरक्षण मिला, इस राष्ट्रीय विमर्श को एक नया संदर्भ देता है।

राष्ट्रपति की मंजूरी के बाद वंदे मातरम् अब ऐसे कानूनी संरक्षण के दायरे में आ गया है, जिसमें इसके जानबूझकर अपमान या गायन में बाधा डालने को दंडनीय बनाया गया है। यह केवल किसी गीत के सम्मान का प्रश्न नहीं, बल्कि स्वतंत्रता आंदोलन की उस स्मृति का सम्मान भी है, जिसमें वंदे मातरम् ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। लेकिन इस कानून की सबसे बड़ी सार्थकता तभी होगी, जब हम कानूनी बाध्यता और स्वाभाविक देशभक्ति के बीच अंतर समझें।

किसी राष्ट्रीय गीत के अपमान को रोकने के लिए कानून जरूरी हो सकता है, लेकिन कानून नागरिक के भीतर राष्ट्रप्रेम पैदा नहीं कर सकता। देशभक्ति तब वास्तविक होती है, जब वह हमारे व्यवहार में दिखाई देती हैकृजब हम कानून का पालन करते हैं, सार्वजनिक संपत्ति को अपना समझते हैं, भ्रष्टाचार को सामान्य मानने से इनकार करते हैं, अपने कर्तव्यों को निभाते हैं और दूसरे नागरिक के अधिकारों का सम्मान करते हैं।

आज जरूरत इस बात की भी है कि, राष्ट्रभक्ति को केवल नारों और प्रतीकों तक सीमित न किया जाए। तिरंगे को सलाम करना देशभक्ति

है, लेकिन तिरंगे के नीचे खड़े हर नागरिक के अधिकार का सम्मान करना भी उतनी ही बड़ी देशभक्ति है।

भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में राष्ट्रीय एकता का अर्थ एकरूपता नहीं है। हमारी लोकतांत्रिक शक्ति इसी में है कि, अलग-अलग भाषाओं, आस्थाओं, विचारों और संस्कृतियों के लोग एक साझा भारतीय पहचान के साथ आगे बढ़ते हैं।

इसलिए वंदे मातरम् को कानूनी संरक्षण मिलने का संदेश केवल इतना नहीं होना चाहिए कि, राष्ट्रीय गीत के सम्मान के लिए कानून मौजूद है। इसका बड़ा संदेश यह होना चाहिए कि, राष्ट्र के प्रति सम्मान कानून से शुरू होकर नागरिक चरित्र तक पहुंचे।

इस स्वतंत्रता दिवस पर जब पूरा देश तिरंगे के नीचे खड़ा होगा, तब हमें यह भी पूछना चाहिए कि, हम अपने हिस्से का भारत कैसा बना रहे हैं...? क्या हम नियमों का पालन करते हैं...? क्या हम सार्वजनिक जीवन में ईमानदारी को महत्व देते हैं...? क्या हम असहमति का सम्मान करते हैं...? क्या हम कमजोर नागरिक के अधिकार के लिए आवाज उठाते हैं...?

यदि इन सवालों के जवाब सकारात्मक हैं, तो वही वंदे मातरम् की भावना का वास्तविक विस्तार है।

गीत का सम्मान कानून सुनिश्चित कर सकता है, लेकिन मातृभूमि के प्रति सम्मान, नागरिक का चरित्र ही सुनिश्चित करता है।

इस स्वतंत्रता दिवस पर इसलिए वंदे मातरम् केवल आवाज में नहीं, हमारे आचरण में भी सुनाई देना चाहिए। यही स्वतंत्रता का सम्मान होगा और यही उस भारत के प्रति हमारी सच्ची जिम्मेदारी और राष्ट्र के प्रति हमारी प्रतिबद्धता को अभिव्यक्त करेगा, जिसे बेहतर बनाने का दायित्व आज हमारे कंधों पर है।

छात्राओं ने लिया निबन्ध प्रतियोगिता में हिस्सा

माही की गूंज, थांदला।

हर घर तिरंगा अभियान के अंतर्गत पीएमश्री विद्यालय में लायंस क्लब थांदला के तत्वाधान में देशभक्ति से ओतप्रोत निबंध प्रतियोगिता का आयोजन विद्यालय में आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एसडीएम भास्कर गांचले, अध्यक्षता लायंस क्लब थांदला अध्यक्ष ओमप्रकाश बजाज, कार्यक्रम संयोजक पीएमश्री विद्यालय प्राचार्य एसएन श्रीवास्तव के आतिथ्य में सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम में लायंस क्लब अध्यक्ष ओमप्रकाश बजाज ने लायंस क्लब की जानकारी देते हुए बताया कि, क्लब का उद्देश्य सेवा कार्य करना एवं देश के लिये समर्पित भावना से जुड़ कर देशहित में निःस्वार्थ भावना से कार्य करना है। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए एसडीएम भास्कर गांचले ने कहा कि, 10 अगस्त से 17 अगस्त तक शासन के आदेशानुसार नगर में देशभक्ति से ओतप्रोत आयोजन होना तय है। इसी संदर्भ में लायंस क्लब थांदला द्वारा आयोजित निबंध प्रतियोगिता को आयोजित करना हर्ष की बात है।

पचास से ज्यादा छात्राओं को अतिथियों द्वारा कॉपी वितरण कर प्रतियोगिता का आगाज किया। कार्यक्रम का संचालन दीपेंद्र समाधियां द्वारा किया गया, आभार लायन प्रशांत उपाध्याय ने माना।

सर्पदंश से बालिका की मौत

माही की गूंज, बनी। ग्राम बनी में सोमवार शाम 5 से 6 के मध्य एक 11 वर्षीय बालिका डॉली पिता लक्ष्मण डामोर को सर्प ने काट लिया जिससे उसकी मौत हो गई।

परिवार से प्राप्त जानकारी अनुसार डाली घर पर ही खेल रही थी तभी अचानक दरवाजे के पीछे से निकल कर सर्प ने उसे हाथ में काट लिया। जैसे ही परिवार वालों को सर्प के काटने की जानकारी मिली तत्काल पेटलावद सिविल अस्पताल मासुम को ले जाया गया। मगर जहर का कहर बालिका सहन न कर पाई और पेटलावद अस्पताल पहुंचने के पहले ही रास्ते में दम तोड़ दिया। मृत्यु की पुष्टी डाक्टर द्वारा अस्पताल पहुचने पर की गई।

परिवार द्वारा मामले की जानकारी पुलिस को दी जिस पर पुलिस ने मर्ग कायम किया।

अतिक्रमण मुहिम : नाली के बाहर के दुकानदारों को हटाया

ग्राम पंचायत की अतिक्रमण मुहिम के चलते कुछ इस तरह से हटाई दुकाने व तोडे ओटले।

माही की गूंज, खवासा।

नाली के बाहर सड़क पर ठेलागाड़ी, घूमटी व अस्थाई दुकान लगाने वाले को अतिक्रमण मुक्त अभियान के तहत ग्राम पंचायत खवासा ने मंगलवार को विशेष मुहिम चलाई। पंचायत ने पुलिस व प्रशासन के सहयोग के साथ अभियान चलाया और बस स्टैंड से लेकर बाजना मार्ग तक नाली के आगे लगी समस्त दुकानों को हटाया गया। वहीं पंचायत ने नाली के बाहर जिसने भी अतिक्रमण कर ओटले बना रखे थे उन ओटलों को भी बैकोलोडर मशीन से तोड़कर समतल किया गया। जो थैलागाड़ी लगाकर नाली के बाहर खड़े होकर व्यापार करते थे उन सभी सब्जी व अन्य व्यापारी को पुरानी प्राथमिक शाला परिसर में दुकान लगाने का निर्देश ग्राम पंचायत ने जारी किया।

वहीं बस स्टैंड पर लगी अतिक्रमण में टीन शेड वाली गुमटियों को भी शक्ति के साथ ग्राम पंचायत ने हटाया।

खवासा में खासकर बाजना मुख्य मार्ग पर नाली के बाहर दुकान संचालित करने के चलते प्रतिदिन यातायात बाधित होता था और आमजन को परेशानी भुगतनी पड़ती थी। खवासा ग्राम पंचायत द्वारा की गई उक्त अतिक्रमण मुहिम की कार्रवाई को स्थानीय लोगों ने सराहा। और कहा कि, पंचायत द्वारा समय-समय पर उक्त मुहिम चलाई जाना चाहिए ताकि आम लोगों को यातायात में परेशानी न हो।

तिरंगा यात्रा में बच्चों का उत्साह

माही की गूंज, भामल।

शासकिय व अशासकिय स्कूल पर बुधवार को हर घर तिरंगा अभियान के राष्ट्रव्यापी आह्वान पर स्थानीय स्तर पर तिरंगा यात्रा का आयोजन किया गया। सुबह होते ही विद्यालयों के सैकड़ों छात्र-छात्राएं पारंपरिक वेशभूषा और हाथों में राष्ट्रीय ध्वज लेकर मुख्य मैदान पर एकत्रित हुए।

मुख्य अतिथि और प्रशासनिक अधिकारियों ने राष्ट्रगान के बाद हरी झंडी दिखाकर इस गौरव यात्रा को रवाना किया। अधिकारियों ने बच्चों को संबोधित करते हुए कहा कि, तिरंगा हमारी आन, बान और शान का प्रतीक है, हर घर में इसे फहराकर हमें अपने वीर शहीदों को नमन करना चाहिए।

कदम यात्रा के दौरान बच्चों का जोश और उमंग चरम पर था। देशभक्ति के गीतों और नारों से पूरा गांव गूंज उठा। स्कूली बच्चों ने कतारबद्ध होकर अनुशासन के साथ मार्च किया। रास्ते में जगह-जगह पुष्प वर्षा कर यात्रा का स्वागत किया और बच्चों का हौसला बढ़ाया।

तिरंगा यात्रा की समाप्ति पर बच्चों और शिक्षकों ने आधिकारिक पोर्टल पर सेल्फी विथ तिरंगा भी अपलोड किया।

स्कूल प्रशासन ने बताया कि इस अभियान के तहत 17 अगस्त तक स्कूलों में चित्रकला, प्रश्नोत्तरी और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन निरंतर जारी रहेगा।

भामल के ग्रामीणों द्वारा खुद रात में गश्त करने की अनूठी पहल की शुरू

बढ़ती चोरियों के खिलाफ ग्रामीणों की अनूठी पहल, खुद लाठी-डंडा लेकर रात में कर रहे हैं गश्त

माही की गूंज, खवासा।
सुनील सोलंकी

भामल सहित आस-पास के इलाकों में बढ़ती चोरी की वारदातों और सुरक्षा के अभाव को देखते हुए भामल के ग्रामीणों ने सुरक्षा का जिम्मा अब खुद अपने हाथों में ले लिया है। पुलिस प्रशासन के भरोसे बैठने के बजाय ग्रामीणों ने एकजुट होकर ग्राम सुरक्षा समिति बनाई है, और रात में खुद गश्त (पहरेदारी) करना शुरू कर दिया है।

ग्रामीणों ने आपसी सहमति से सप्ताह की एक समय-सारणी तैयार की है। इसके तहत रोजाना 5 से 10 युवाओं और बुजुर्गों की अलग-अलग टोलियाँ बनाई गई हैं। यह टोलियाँ रात 11 बजे से सुबह 4 बजे तक लाठी, टॉर्च और सीटी लेकर पूरे गांव और खेतों के आसपास चक्कर लगाती हैं। किसी भी संदेहास्पद गतिविधि को देखते ही जोर-जोर से सीटी बजाकर पूरे गांव को अलर्ट कर दिया जाता है।

ग्रामीणों का कहना है कि, पिछले कुछ दिनों में क्षेत्र में मवेशी (पशु) चोरी और घरों में सेंधमारी की घटनाएं तेजी से बढ़ी थीं। पुलिस थाना व चौकी दूर होने के कारण मौके पर तुरंत पुलिस नहीं पहुंच पाती। इसी समस्या का हल निकालने के लिए गांव की चौपाल पर एक बैठक बुलाई गई, जिसमें सामूहिक रूप से खुद पहरेदारी करने का यह फैसला लिया गया।

पुलिस ने की तारीफ

ग्रामीणों के इस सामूहिक प्रयास की स्थानीय पुलिस प्रशासन ने भी सराहना की है। चौकी प्रभारी अनिल गुहारिया ने कहा कि, ग्रामीणों की यह सतर्कता अपराध रोकने में बेहद मददगार साबित होगी। पुलिस ने ग्रामीणों को सुरक्षा संबंधी कुछ जरूरी टिप्स भी दिए हैं और आपातकालीन स्थिति में तुरंत पुलिस को सूचना देने की अपील की है।

न्यायालय गजेन्द्र रावत व्यवहार न्यायाधीश वरिष्ठ खण्ड थांदला

जावक क्रमांक :- 133, थांदला — दिनांक 17.7.2026

// सूचना पत्र //

भूरू पिता इलाही बख्स जाति मुसलमान आयु 65 वर्ष निवासी ग्राम बोरझाड जिला आलीराजपुर :- वादी

विरुद्ध

फरिद बख्स जाति मुसलमान पिता इलाही बख्स मुसलमान अदि-1 निवासी रघुनंदन मार्ग थांदला हाल मुकाम बासवाडा राजस्थान :- प्रतिवादीगण

सर्व साधारण को सूचित किया जाता है कि इस न्यायालय के दीवानी वाद प्रकरण कंमाक 21ए/2021 भूरू पिता इलाही बख्स जाति मुसलमान आयु 65 वर्ष निवासी ग्राम बोरझाड जिला आलीराजपुर विरूद्ध फरिद बख्स जाति मुसलमान पिता इलाही बख्स मुसलमान अदि-1 निवासी रघुनंदन मार्ग थांदला हाल मुकाम बासवाडा राजस्थान मे प्रस्तावित प्रतिवादी क्रंमाक 1 परवीन पति करीम बक्स आयु 50 वर्ष निवासी रघुनंदन मार्ग थांदला एवं प्रस्तावित प्रतिवादी कंमाक 2 सकलेन पिता करीमक्स आयु 20 वर्ष निवासी रघुनंदन मार्ग थांदला का सूचना पत्र प्रकाशन हेतू प्रेषित किया जा रहा है।

यदि किसी को कोई आपत्ति होतो वह इस न्यायालय में पेशी दिनांक 25-08-2026 को स्वंय या अपने प्रतिनिधि अथवा अपने अधिवक्ता के माध्यम से इस न्यायालय में उपस्थित होवे।

(गजेन्द्र रावत)
व्यवहार न्यायाधीश वरिष्ठ खण्ड
थांदला जिला झाबुआ म0प्र0

सजेली ब्रिज का अधूरा कार्य लोगों की जान का बन रहा कारण, मंगलवार को ट्रक में दबने से दो और की हुई मौत

माही की गूंज, झाबुआ/मेघनगर।

सजेली रेलवे फाटक परिक्षेत्र लोगों की जान जाने का एक ठिया सा बन गया है। उक्त सजेली रेलवे क्रॉसिंग फाटक पर बन रहे ओवरब्रिज का निर्माण कार्य लंबे समय से रुक-रुक कर चल रहा है।

उक्त अधूरा निर्माण कार्य भी लोगों की जान जाने का एक कारण बना हुआ है। बताते हैं उक्त ओवरब्रिज रेलवे एवं लोक निर्माण विभाग द्वारा निर्माण कार्य किया जा रहा है जिसमें बढ़ते समय के साथ मूल्यांकन मे कमी व खर्च के मापदंड में अंतर होने के चलते सरकारी प्रोसेस में यह कार्य अभी भी अधूरा पड़ा है। वहीं वर्तमान में बारिश के चलते सजेली फाटक की क्रॉसिंग पर वाहनों की आवाजाही में काफी परेशानियों का सामना करना पड़ रहा है।

दो पहिया वाहन के जरा से स्लिप होने के कारण उनकी जान पर बन आ रही है, मंगलवार को भी यही खूनी दृश्य उक्त सजेली रेलवे फाटक के समीप देखने में आया। जिसमें मेघनगर निवासी सुरेशचंद्र जैन का नया ट्रक एमपी 45 जेडएल 5035 मेघनगर से थांदला की ओर खाली जा रहा था। वहीं तलावली निवासी बहादुर भूरिया व उसके पिता भाणजी भूरिया जो की तलावली सरपंच के भाई व पिता थे जो सजेली से मेघनगर की ओर अपनी बाइक क्रमांक एमपी 45 एम 3822 से जा रहे थे कि, अनुमान अनुसार जैसे ही बाइक जरा सी स्लिप हुई और वह ट्रक में भाणजी एवं बहादुर के साथ जा घुसी। 12 चक्का का ट्रक चालक जब तक ब्रेक मारकर गाड़ी रोकता तब तक पहला एवं उसके बाद दूसरा पहिया भी क्लीनर साइड के पहिए में दोनों बुरी तरह कुचले जा चुके थे तथा सिर के भेजे तक निकल गए थे और दोनों की मौके पर ही मौत हो गई।

ट्रक में घुसी बाईक और धुधंले फोटो में ट्रक के पहिए के निचे दबे पिता-पुत्र की मौत का दर्दनाक दृश्य।

पुलिस को सूचना मिलने पर मेघनगर पुलिस पूरे दल के साथ घटनास्थल पहुंची और देखा कि, क्लीनर साइड के दूसरे सिंगल पहिए के नीचे बहादुर दबा हुआ था एवं उसका पिता भाणजी टायर के पिछले हिस्से के बाहर मृत पड़ा था जिसका सर पूरा फट गया था। जैसे ही परिजनों को सूचना मिली तो परिजन एवं महिलाएं घटनास्थल पर पहुंची और असमय उक्त दर्दनाक दुर्घटना में हुई मौत पर परिजनों का हाल रो-रो कर बुरा था। वहीं परिजनों के साथ ग्रामीणों में भी आक्रोश दिखा और सड़क पर लकडे डाल चक्का जाम कर अपना आक्रोश जताया। लेकिन पुलिस ने परिजनों एवं ग्रामीणों को पूरी संवेदनाओं के साथ समझाइस दी और यातायात चालू कर ट्रक को जब्ती में लेकर बहादुर एवं भाणजी का पीएम करवाकर शव परिजनों को सौंप दिए थे।

बता दे कि, उक्त स्थान पर यह पहली घटना नहीं है एक वर्ष पूर्व भी उक्त निर्माणाधिन ओवरब्रिज के दौरान ही एक चार पहिया वाहन में सवार नौ व्यक्तियों की दर्दनाक मौत हो गई थी। वहीं कुछ समय पूर्व गुजरात से महाकाल जा रही यात्री बस यही गड्ढों की वजह से अनियंत्रित होकर ब्रिज में जा घुसी जिसके चलते बस में बैठी एक सवारी फाटक के बाहर आकर सीधे ब्रिज से टकराई और उसकी मौत हो गई।

ऐसे कई दर्दनाक घटनाएं निर्माणधीन ओवर ब्रिज के दौरान यहां देखी गई है लेकिन अब भी मूल्यांकन एवं खर्च के बीच में अंतर राशि के चलते उक्त ब्रिज का उक्त निर्माण कार्य अधर व अधूरा पड़ा है। माही की गूंज अपील करता है कि, यह सरकारी प्रोसेस इन दर्दनाक दुर्घटनाओं को देखते हुए त्वरित पूरा करें और ओवरब्रिज का निर्माण जल्द ही पूर्ण करें।

मां शक्ति की आस्था और धर्मांतरण मुक्त झाबुआ अभियान के तहत शोभायात्रा

माही की गूंज, खवासा।

अंतर्राष्ट्रीय हिंदू परिषद, राष्ट्रीय बजरंग दल के बैनर तले बुधवार को जय मां आदिशक्ति भीमकुंड धाम समिति ने विशेष प्रदर्शन के साथ धर्मांतरण मुक्त झाबुआ अभियान के तहत एक विशेष शोभायात्रा निकाली गई। उक्त शोभायात्रा रोग्यादेवी मंदिर से बामनिया रोड स्थित मंडी परिसर तक मुख्य मार्ग से होते हुए निकली।

उक्त शोभा यात्रा में जय मां आदिशक्ति भीमकुंड धाम समिति ने विशेष प्रदर्शन का चित्रण किया। जिसमें मां आदि की शक्ति, आराधना एवं आस्था का विशेष दर्शन देखने को मिला। जिसमें किसी के हाथ में जलता हुआ खप्पर और भारी भरकर सांकल, तो किसी के हाथ में त्रिशूल, तो किसी के हाथ में तलवार। और इस प्रदर्शन में तलवार से जुबान को काटने का जो प्रदर्शन किया वह वास्तविक रूप से हर किसी के दिल को दहला गया। और संदेश दिया कि, धर्मांतरण के इस विषैले जहर को मन ,मस्तिष्क व जुबान से काटकर फेंकना होगा। उक्त प्रदर्शन राष्ट्रीय बजरंग दल सागर मध्य प्रदेश की टीम ने प्रयोजित किया।

फर्जी पट्टे वितरण मामले में क्या मंत्री भूरिया बचा रही है सरपंच फुँदी बाई को...!

डंपिंग ग्राउंड पर भी पट्टे देने की जानकारी आ रही सामने, लेन-देन करोड़ से आगे निकला

माही की गूंज, पेटलावद।

ग्राम पंचायत सारंगी में सरपंच फुँदी बाई, सचिव हरिराम और उपसरपंच द्वारा शासकीय राजस्व विभाग को आबंटित भूमि पर अवैध रूप से अपात्रों को पैसे लेकर पट्टे बेचने का गंभीर आरोप एक बार नहीं तीन बार अलग-अलग जगहों के पट्टे देने का आरोप लगे है।

एक मामले में ग्राम पंचायत ने शिकायत कर्ताओं से समझौता तक किया ओर उनको राशि लौटाई गई। जबकि दूसरी शिकायत में कार्रवाई के नाम पर बड़े-बड़े दावे करने वाली अनुविभागीय अधिकारी राजस्व पेटलावद तनुश्री मीणा शायद दबाव, प्रभाव की शिकार होकर शिकायतकर्ता के द्वारा प्रस्तुत पट्टे को भवन प्रमाण-पत्र बता कर पल्ला झाड़ लिया। शिकायत कर्ताओं को कार्रवाई के नाम पर पुलिस ओर न्यायालय जाने की राय दे कर रवाना कर दिया। खेर बीते मंगलवार कुछ ओर लोग वही शिकायत लेकर जन सुनवाई में पहुंच गए जिसमें शिकायत के साथ बकायदा पट्टे की प्रति पेश कर शिकायत की। जिसमें पट्टे दिए भी कहा, जहा राजस्व विभाग को आबंटित हो चुके सर्वे नंबर 1952 पर जहा टप्पा तहसील कार्यालय का निर्माण हो चुका है ओर बाकी भूमि पर राजस्व विभाग का दूसरा निर्माण भविष्य में प्रस्तावित है। मामला सामने आने के बाद अनुविभागीय अधिकारी राजस्व समझ चुकी है कि, मामला बड़ा है लेकिन इमानदार होने के खोखले दावे, शिकायतकर्ताओ को मिले खोखले आश्वासन के साथ ही खत्म हो गए।

गरीब आदिवासी को पट्टे नहीं

बड़ा सवाल ये उठता है कि, जितने भी पट्टे दिए गए उसमें लगभग पट्टे सामान्य ओर ओबीसी वर्ग के लोगों को ही दिए गए। जबकि बड़ी संख्या में ग्राम पंचायत सारंगी में आदिवासी ओर एसी वर्ग के लोग रहते है। कई परिवार की स्थिति गंभीर होने के बाद भी गरीब वर्ग को यहां एक भी पट्टा नहीं दिया गया। जिससे साफ है जिन लोगों को पट्टे दिए गए उन्होंने अपात्र होते हुए पैसे देकर पट्टे लेने में कामयाब रहे। हालांकि केवल कागजी घोड़े दौड़ाए गए किसी को भी पट्टा देने के बाद बताई गई भूमि पर कब्जा नहीं दिया गया ओर जब कब्जे की बात सामने आई तो राजस्व विभाग ने अतिक्रमण बता कर सभी पट्टाधारियों को हटा दिया। उनके द्वारा प्रस्तुत पट्टे के दस्तावेज तक मान्य नहीं हुए ,जबकि खुद सरपंच ने पट्टे देने की बात स्वीकार कर ली ।

मंत्री का आशीर्वाद तो नहीं

फर्जी पट्टे का मामला उजागर होने के बाद से ग्राम पंचायत सरपंच फुंदी बाई मेड़ा क्षेत्र की विधायक ओर मंत्री निर्मला भूरिया के साथ ज्यादा दिखाई दे रही है। क्षेत्र में मंत्रीजी के दौरे में सरपंच, मंत्रीजी के आसपास ही दिखाई दे रही है। मंत्री निर्मला भूरिया के जन्मदिन पर उनके आवास पर पहुंच कर बधाई तक दी। चर्चा तेज है कि, पूरे मामले को जानबूझ कर दबाया जा रहा है और मंत्री निर्मला भूरिया की भूमिका होने की चर्चा हो रही है कि ,निर्मला के साथ होने का फायदा सारंगी ग्राम पंचायत सरपंच को मिल रहा है।

आदिवासी संगठनो पर भी उठ रहे सवाल

पेटलावद क्षेत्र सहित पूरे झाबुआ जिले में कई आदिवासी संगठन सक्रिय हैं छोटी-छोटी वसूली के लिए ओर आदिवासियों के साथ हो रहे अन्याय को लेकर आवाज बुलंद करते रहते है लेकिन यहां आदिवासी संगठनों की कार्यशैली पर भी गंभीर सवाल उठ रहे हैं। क्योंकि, यहां सारंगी ग्राम पंचायत द्वारा गरीब आदिवासीयो को पट्टे देने की बजाए सक्षम लोगों को पट्टे देकर फायदा पहुंचाया गया। लगातार मामला सुर्खियों में है लेकिन किसी आदिवासी संगठन या आदिवासी नेता द्वारा इस मामले को अब तक उठा नहीं पाए है।

संपादकीय

पुलिस कार्रवाई की स्थिति स्पष्ट करे सरकार

इसमें दो राय नहीं कि किसी आंदोलन के दौरान आंदोलनकारियों के किन्हीं परिस्थितियों में उग्र होने और जन-धन की हानि रोकने के लिए पुलिस-प्रशासन को कार्रवाई करनी होती है। इसमें भी दो राय नहीं है कि राज्य के पास हिंसा को रोकने और कानून-व्यवस्था को बनाये रखने के लिए पर्याप्त शक्तियां हैं। लेकिन प्रश्न इस बात का भी है कि लोकतांत्रिक तरीके से हो रहे विरोध को रोकने के लिए प्रयोग की गई ताकत का स्तर क्या रहा। जाहिर है राष्ट्रविरोधी ताकतों, हिंसक भीड़ तथा छात्रों के आंदोलन को एक ही तौर-तरीके से नहीं निपटा जा सकता है। इसी आलोक में सवाल पैदा होता है कि जंतर-मंतर से शुरू हुए संसद चलो मार्च को रोकने के लिए इस्तेमाल की गई ताकत क्या जरूरी थी? क्या उचित तरीके से अधिकृत थी? ऐसा ही विवाद इस आंदोलन के दौरान पैलेट गन के इस्तेमाल को लेकर खड़ा हुआ है। हालांकि, दिल्ली पुलिस ने शुरुआत से ही पैलेट गन के इस्तेमाल से इनकार किया। जबकि बाद में जनरल डायरी में यह दर्ज किया गया कि रैपिड एक्शन फोर्स ने एंटी-रायट गन से दो राउंड फायरिंग की थी। वहीं दूसरी ओर छात्र प्रदर्शनकारियों पर बल प्रयोग को लेकर विपक्षी दल सरकार पर लगातार हमलावर रहे हैं। खासकर, कांग्रेस नेतृत्व वाले विपक्ष ने गृह मंत्री पर पैलेट गन के इस्तेमाल को लेकर तीखे प्रहार किए हैं। वे बाकायदा गृह मंत्री के इस्तीफे को लेकर लगातार अभियान चलाते रहे हैं। इसी बीच सूचना के अधिकार के तहत दिल्ली के दो अस्पतालों से एकत्र की गई जानकारी के अनुसार बीस जुलाई को छात्रों के विरोध प्रदर्शन के दौरान कम से कम दस लोगों को पैलेट गन से चोट लगी थी। इन अस्पतालों में पैलेट गन से आहत छात्रों ने उपचार कराया था। निस्संदेह, पैलेट गन से घायल होने वालों का यह आंकड़ा इसलिए भी अहम है क्योंकि यह एक आधिकारिक रिकॉर्ड पर आधारित है, न कि किसी बिना पुष्टि वाले दावों पर आधारित है।

दरअसल, पैलेट गन की जद में आये छात्रों के अनुभव परेशान करने वाले रहे हैं। खबरों के अनुसार, कुछ प्रदर्शनकारियों के चेहरों, छाती और आंखों पर चोट आई है। आशंका व्यक्त की जा रही है कि एक छात्र की आंख की रोशनी भी जा सकती है। सार्वजनिक विमर्श में सवाल उठाये जाते रहे हैं कि छात्र आंदोलनकारियों के विरुद्ध पैलेट गन का इस्तेमाल करने का तार्किक आधार क्या है। वहीं दूसरी ओर कानून-व्यवस्था बनाये रखने के दौरान मेटल पैलेट गन पर रोक लगाने की मांग को लेकर दायर याचिका पर सुनवाई करते हुए, सुप्रीम कोर्ट ने भी हाल ही में कहा था कि मौजूदा नियमों के तहत विशेष परिस्थितियों में इनका इस्तेमाल किया जा सकता है। हालांकि, सुप्रीम कोर्ट ने ऐसे हथियार रखने की कानूनी वैधता और किसी खास घटना में इनके गलत इस्तेमाल के आरोपों के बीच फर्क किया है। निस्संदेह, इस फर्क की सूक्ष्मता से जांच होनी चाहिए। इसके इस्तेमाल के बाद किसी तरह का विवाद न हो, इसलिए स्थिति को साफ करने के लिए पारदर्शिता अपनाना भी बेहद जरूरी है। इससे जुड़े कई तथ्यों को लेकर सावधानी बरती जानी चाहिए, जिसमें गोला-बारूद का पर्याप्त रिकॉर्ड रखना, सीसीटीवी फुटेज, बॉडी कैमरा रिकॉर्डिंग, वायरलेस की बातचीत का रिकॉर्ड और साथ ही मेडिकल रिकॉर्ड भी सुरक्षित रखा जाना जरूरी है। साथ ही इन तथ्यों की स्वतंत्र जांच की जानी भी जरूरी है। वहीं दूसरी ओर सरकार का भी दायित्व बनता है कि भीड़ को काबू करने में पैलेट गन के इस्तेमाल से जुड़े तमाम नियम स्पष्ट रूप से बताए जाएं। वहीं दूसरी ओर यदि इनका अंधाधुंध प्रयोग किया गया हो तो इसके लिये जिम्मेदार लोगों को जवाबदेह ठहराया जाना भी बेहद जरूरी है। इस तथ्य से भी इनकार नहीं किया जा सकता है कि भारत में विरोध करने का अधिकार एक घोषित संवैधानिक स्वतंत्रता है। इसकी रक्षा के लिए संयम की जरूरत अपरिहार्य शर्त है। यह दोनों तरफ से जरूरी है- प्रदर्शनकारियों और सरकार की तरफ से। लेकिन विडंबना है कि अक्सर देश में पुलिस व सुरक्षाबल छात्रों के धरनों व प्रदर्शनों के दौरान बात-बात पर निर्ममता से लाठी भांजते नजर आते हैं।

भारतीय डिजिटल क्षमता की चौथी पंक्ति

काबिलियत, जब इसे बोलने को मौका मिले, तो अभी भी जन्मजात कुलीनों को धूल चटाने में सक्षम है। 1911 में, कलकत्ता के मैदान पर, नंगे पैर खेलने वाली मोहन बागान टीम ने बूट पहने हुए अंग्रेज़ रेजिमेंट को हराकर आईएफए शील्ड जीती थी। इससे परतंत्र देश को अहसास हुआ कि बराबरी के मैदान पर शासकों का मुकाबला किया जा सकता है और उन्हें हराया जा सकता है। यह कोई संयोगवश एकल घटना नहीं थी। 1956 में मेलबर्न में, भारत ओलंपिक फुटबॉल के सेमीफ़ाइनल तक पहुंचा; ऐसा करने वाली वह तब तक की इकलौती एशियाई टीम थी। यह सीख पुरानी नहीं पड़ी। कुछ हफ़्ते पहले ग्लासगो में, दक्षिण त्रिपुरा के बेलोनिया वासी और साइकिल मैकेनिक की बेटी अस्मिता डे ने भारत के लिए पहला कॉमनवेल्थ जूडो गोल्ड मेडल जीता। उन्होंने फ़ाइनल में एक कनाडाई खिलाड़ी को 'सडन डेथ' (अतिरिक्त समय) में हराया। पैदाइश उन्हें साइकिल मिस्त्री के घर मिली, लेकिन काबिलियत के दम पर वह ग्लासगो तक पहुंची। खेल की भाषा में विवेकानंद का तर्क भी यही है, जो साम्राज्य के विरुद्ध सही साबित हुआ और फिर आज़ादी बाद भी। पूर्णता इंसान के भीतर होती है, और उसे किसी कुलीन या उच्च घराने में जन्म लेने की इजाजत नहीं चाहिए।

इस लेख के पहले भाग में कीमत और समाधान की बात थी। कोई हल्की-फुल्की जांच नहीं, बल्कि एक अन्य उपकरण या सिस्टम। हम उसे ही बना रहे हैं।

कमरे का निर्माण एवं डिजिटल प्रौद्योगिकी समूह = पहला अंदेशा कि भारत बहुत बड़ा और बहुत गरीब देश होने के कारण ऐसी चीज़ नहीं बना सकता; लेकिन भारत पहले ही इसका जवाब दे चुका है। आधार कार्ड प्रणाली ने आबादी के बड़े स्तर पर वह समस्या हल की जिस पर काबिलियत का रिकॉर्ड टिका है, व्यक्ति कौन है, इसकी पक्की पहचान। फिर यूपीआई ने उस पहचान के ज़रिए वित्तीय लेन-देन संभव बनाया। आज कुल वैश्विक रियल टाइम वित्तीय लेन-देन का करीब आधा हिस्सा यूपीआई के ज़रिए हो रहा। यह व्यवस्था पुरानी इकोनॉमीज द्वारा निर्मित किसी भी प्रणाली के मुकाबले सस्ती व तेज़ है। डिजीलॉकर ने तीसरा सिद्धांत स्थापित किया। नागरिक अपने प्रमाण-पत्र डिजिटल प्रारूप में अपने साथ कहीं भी ले जा पाए,जो भरोसेमंद, सत्यापन योग्य, हर जगह उपलब्ध और मान्य हो। जिस देश ने ये तीन चीज़ें बना ली हों, उससे अब कुछ नया प्रयास करने को नहीं कहा जा सकता। पहचान से यह तय होता है कि आप कौन हैं। पेमेंट से यह कि क्या ट्रांसफर कर सकते हैं। वहीं डॉक्यूमेंट से यह कि क्या साबित कर सकते हैं। कैपेबिलिटी स्मार्ट कार्ड स्थापित करेगा कि आप क्या कर सकते हैं। ढांचा वही, एक और मंजिल के साथ, भारत की डिजिटल क्षमता की चौथी परत।

यह साधन एक राष्ट्रीय क्षमता संरचना है, एक भरोसेमंद और गतीशील रिकॉर्ड, इस बारे में कि कोई व्यक्ति असल में क्या कर सकता है, जीवनपर्यंत साथ चलने वाला, नागरिक के पास वह कार्ड जो आज के दिन पक्के पहचान पत्र जैसा है। वक्त-वक्त पर सत्यापित करके इसमें नई जानकारी जुड़ सकती है, केवाईसी की तरह। इसमें डिग्री केवल आखिरी पन्ना न होकर एक अध्याय है। कारखाने में सिद्ध किया कौशल हो या रेजिमेंट, या अस्पताल या फिर कार्यक्षेत्र का अनुभव, सब उसी रिकॉर्ड में हो, उसी तरह अंकों अथवा ग्रेडिंग में, जैसे पढ़ाई में होता था।

भरोसे का गोल्ड स्टैंडर्ड = भारत प्रमाणपत्र जारी करने में नाकाम नहीं रहा। बस उनका कोई मोल डलवाने में विफल रहा। बीस में से बमुश्किल एक कारीगर के पास औपचारिक कौशल प्रमाणपत्र होता है, जबकि जर्मनी में चार में से लगभग तीन के पास और दक्षिण कोरिया में हर किसी कामगार के पास ऐसा प्रमाणपत्र होता है, और हमारा वह कागज़ अक्सर न तो भरोसा दिला पाता है, न रुतबा और न ही बेहतर वेतन। प्रमाणपत्र तब तक मूल्यविहीन है जब तक वह भरोसेमंद न हो, और भरोसे की एक खास शर्त होती है। जो सिखा रहा है, वह प्रमाणपत्र जारी नहीं करेगा। ब्रिटेन में 'सिटी एंड गिल्ड्स' जैसी संस्थाएं स्वतंत्र रूप से मानकीकरण व मूल्यांकन स्थापित करती हैं, यह उस नियोक्ता या कारखाने से इतर हैं, जहां काबिलियत हासिल की गई। यह अलहदगी योग्यता को कहीं भी मान्य व भरोसेमंद बनाती है। भारत की मुश्किल प्रमाणकर्ता की कमी नहीं है। पर इसके प्रमाणकर्ताओं का भरोसा नहीं है। कॉलेजों और तकनीकी संस्थानों को मान्यता देने के लिए बनाई गई संस्थाएं अक्सर उसी संरक्षण-तंत्र का हिस्सा बन जाती हैं, जिनकी निगरानी करने लिए उन्हें बनाया गया है; इनमें नियुक्तियां योग्यता की बजाय सिफारिशों से होती हैं, जब मान्यता देने वाली संस्था न तो स्वतंत्र हो और न ही निष्पक्ष, तो उसकी मुहर का क्या मोल। जो प्रमाणकर्ता खुद उसी व्यवस्था का हिस्सा बन जाए, जिसकी जांच करनी है, तो यह रबर स्टैम्प भर है।

भारत को ऐसा प्रमाणकर्ता बनाने होंगे जो खुद प्रशिक्षित न करते हों लेकिन जिनके दिए प्रमाणपत्र पर हर कोई भरोसा करे। उसकी स्वतंत्रता ढांचागत हो = एक कानूनी संहिता, निश्चित पेशेवर कार्यकाल, प्रकाशित मानक, अनाम आकलनकर्ता, पड़ताल करने को मौजूद खुले परिणाम और जिन संस्थाओं को वह प्रमाणित करे, उनका किसीतरह प्रतिनिधित्व न करने वाले। वह प्रमाणपत्र को जीवंत रखे, असल कार्य प्रवाह के जरिए पुनर्वैधता होती रहे बजाय इसके कि स्नातक स्तर पर फिक्स हो जाए। प्रामाणिकता से श्रेय तक = एक प्रमाणपत्र जो अपटुडेट एवं भरोसेमंद हो न कि महज यादगार। वह जिससे कर्ज़ दाता की नज़र में व्यक्ति की ऋण अदायगी योग्यता बदल जाए। वेल्डर का सत्यापित कौशल स्तर या नर्स की स्थापित पेशेवर क्षमता उसे कर्ज़ देने का जोखिम कम कर देता है और घटा जोखिम उधार की शुरुआत है। बैंक इनका मूल्य डाल सकता है। नियोक्ता इन पर दांव लगा सकता है। परिवार इनके लिए निवेश कर सकता है। काबिलियत, एक बार प्रमाणित हो जाने पर, ऐसी आर्थिक हैसियत बन जाती है जो व्यक्ति के साथ चलती है व बढ़ती जाती है।

और इसे अवश्य ही दो दिशाओं में आगे बढ़ना चाहिए, क्योंकि एकल सीढ़ी यही असली नाकामी है कि राह एक ही होती है। इसको अगल-बगल में भी बढ़ना चाहिए, ताकि कोई व्यक्ति अगर 40 साल की उम्र में अपनी ज़िंदगी की दिशा बदलना चाहे तो उसे 18 साल की उम्र की तरह फिर से शुरुआत न करनी पड़े; मसलन, तकनीकी कारीगर का उद्यमी बनना, सैनिक का प्रशासक बनना, कार्यानुभव से अर्जित काबिलियत को गेट पर छोड़ आने की बजाय दीवार से पार ले जाना। जो नई बात है वह यह कि वेल्डर और नर्स में भी, बतौर अधिकार, यह आकांक्षा बने कि उनके पास कहीं भी इस्तेमाल हो सकने वाली प्रामाणिकता हो, जिससे अब भाग्य बदल जाए। यह तरक्की अवश्य ऊपर की ओर हो। हमारे यहां यही सबसे ज़्यादा नज़रअंदाज है। अपनी कामकाजी ज़िंदगी के दौरान एक व्यक्ति ने अपना जो भी मूल्य बनाया है, वह भी एक विरासत है, एकमात्र ऐसी विरासत जिसकी कद्र राष्ट्र को करना चाहिए, और यह ऊपरी पायदान चढ़ती जाए। प्रमाणित दस्तकार इस लायक तरक्की करे कि अपना कौशल सिखा सके, और सिखाने से प्रमाणित करने के स्तर तक। एक मास्टर 'प्रोफ़ेसर ऑफ़ प्रैक्टिस' के तौर पर उस पद तक पहुंचे जिसे उसने मेहनत से हासिल किया। ठहराव की भावना उसे जड़ बना देगी। तरक्की की ललक उसे आगे बढ़ाएगी। कई दरवाज़ों वाला घर भी अधूरा है यदि उसमें ऊपर ले जाने वाली सीढ़ी न हो। मतदान के अधिकार ने हर भारतीय को सरकार के सामने बराबर बना दिया है। एक ऐसा ढांचा ज

ले.जे.एस.एस. मेहता

काबिलियत को भरोसेमंद, उपयोगी और तरक्की करवाने वाला है, हर भारतीय को मौकों के मामले में बराबर बनाता है। वोट एक अधिकार है। तरक्की के मौके एक ज़रिया हैं।

विकसित भारत का ढांचा = आखिर में, लेख के पहले भाग में उल्लेखित उन दो लोगों पर लौटते हैं। मैकाले ने ऐसा दिमाग तैयार किया जो साम्राज्य की सेवा करे, और वह साम्राज्य अब खत्म हो चुका है। विवेकानंद का दिमाग किसी मालिक की सेवा नहीं करता, केवल अपने अंदर की पूर्णता है, और उन्होंने यह बात उस दुनिया से कही जिसने तालियां बजाईं और अपने घर चली गई। हमने एक सदी तक उनके कथनों को उद्धृत किया लेकिन उनके विचारों पर बनाया कुछ भी नहीं। अब वह बनाना चाहिए। यही चीज विकसित भारत के सफ़र को हकीकत बनाएगी। यह दृष्टि को मंज़िल और रास्ता, दोनों प्रदान करता है और इसमें हर नागरिक भागीदार है। न कि वह देश जो केवल चंद लोगों को तेज़ी से ऊपर चढ़ने की सीढ़ी प्रदान करता हो, बल्कि ऐसा देश जो वेल्डर, नर्स, बुनकर और कारीगर के लिए भी आगे बढ़ने की राह खोले। वह जो भारत को दुनिया का 'कौशल केंद्र' बनाए, वह राजधानी नहीं जहां से राज चलाया जाता है, बल्कि वह जो आपूर्ति करने वाली हो; एक ऐसी जगह जहां से भरोसेमंद एवं प्रमाणिक इंसानी योग्यता उस दुनिया तक पहुंचे जहां पर इसकी कमी है।

जब आने वाली पीढ़ियां पीछे मुड़कर देखेंगी, तो हो सकता है याद करें कि इस बहस की शुरुआत पेपर लीक होने से हुई थी। उन्हें यह पाने दें कि भारत सिर्फ़ ताला ठीक करने तक नहीं ठिठक गया था। उसने कमरा बनाया, उसके कई दरवाज़े खोले और हर भारतीय को ऊपर चढ़ने के लिए सीढ़ी दी।

डिजिटल मोह में बौद्धिक पूंजी की अनदेखी

किसी भी समाज और राष्ट्र की बौद्धिक समृद्धि का आकलन केवल उसके विद्यालयों, महाविद्यालयों और विश्वविद्यालयों की संख्या से नहीं किया जा सकता, बल्कि यह इस बात से तय होता है कि वहां पुस्तकें कितनी पढ़ी जाती हैं और पुस्तकालय कितने जीवंत हैं। पुस्तकालय केवल किसी भवन में रखी पुस्तकों का संग्रह मात्र नहीं होते, बल्कि वे ज्ञान, विचार, संवाद, संस्कृति और लोकतांत्रिक चेतना के अत्यंत महत्वपूर्ण केंद्र होते हैं। आज के डिजिटल युग में, हालांकि सार्वजनिक पुस्तकालयों की संख्या लाखों में है, लेकिन उनमें पाठकों की लगातार घटती संख्या एक गंभीर चिंता का विषय बन गई है।

यदि आंकड़ों पर नजर डालें, तो संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत राजा राममोहन राय पुस्तकालय प्रतिष्ठान के अनुसार देश में 46,746 से अधिक सार्वजनिक पुस्तकालय हैं। इनमें महाराष्ट्र, केरल, कर्नाटक, पश्चिम बंगाल और तमिलनाडु जैसे राज्यों में इनकी बड़ी संख्या है। इसके अलावा शैक्षणिक संस्थानों के पुस्तकालयों को मिला दिया जाए तो यह संख्या और भी बढ़ जाती है। परंतु, केवल आंकड़ों का यह विस्तार पुस्तकालयों की गुणवत्ता और वास्तविक उपयोगिता की गारंटी नहीं देता है।

आज देश के अधिकांश सार्वजनिक पुस्तकालय सीमित बजट, पुरानी पुस्तकों, जर्जर भवनों, तकनीकी सुविधाओं की कमी और प्रशिक्षित कर्मचारियों के अभाव जैसी गंभीर समस्याओं से जूझ रहे हैं। कई स्थानों पर पुस्तकालयाध्यक्ष के पद वर्षों से रिक्त पड़े हैं, और पुस्तकालयों के खुलने-बंद होने का समय भी आम नागरिकों या नौकरीपेशा लोगों की सुविधा के अनुकूल नहीं होता। इसके अलावा, दिव्यांगों, बच्चों और वरिष्ठ नागरिकों के लिए जरूरी सुविधाओं का अभाव भी पाठकों को इन संस्थानों से दूर कर रहा है।

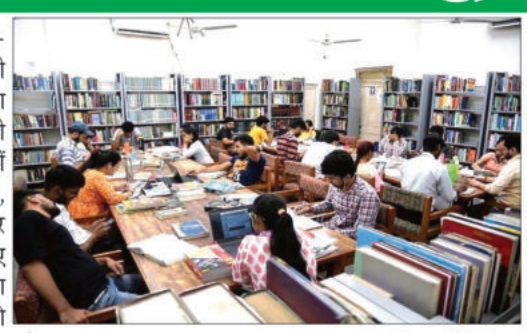

हालांकि, यह मान लेना बिल्कुल गलत होगा कि भारतीय समाज में पढ़ने की इच्छा समाप्त हो गई है। एनसीईआरटी, नेशनल बुक ट्रस्ट और विभिन्न अध्ययनों से यह स्पष्ट होता है कि पढ़ने की प्रवृत्ति आज भी मौजूद है, लेकिन उसका माध्यम और तरीका बदल चुका है। मोबाइल फोन, इंटरनेट और सोशल मीडिया के दौर में युवा डिजिटल सामग्री तो बड़े पैमाने पर पढ़ रहे हैं, लेकिन लंबे समय तक किसी पुस्तक को एकाग्र होकर पढ़ने और उस पर विचार करने की आदत कमजोर हुई है। त्वरित सूचना और मनोरंजन की संस्कृति के बीच एकाग्रता के लिए समय निकालना कठिन होता जा रहा है।

समस्या की जड़ यह है कि यदि पुस्तकालय में पाठक की जरूरत के अनुरूप आधुनिक पुस्तकें, हाई-स्पीड इंटरनेट, शांत वातावरण और सामुदायिक गतिविधियां नहीं होंगी, तो पाठक वहां क्यों जाएगा? एक आधुनिक पुस्तकालय में मुद्रित पुस्तकों के साथ-साथ ई-बुक्स, ऑडियो बुक्स, डिजिटल अभिलेखागार, ऑनलाइन कैटलॉग और दूरस्थ डिजिटल अध्ययन की सुविधा भी होनी चाहिए। डिजिटल तकनीक पुस्तकालयों के लिए चुनौती जरूर है, लेकिन यह उनके विस्तार का सबसे बड़ा अवसर भी है।

इन चुनौतियों से पार पाने के लिए पुस्तकालयों के प्रति दृष्टिकोण को बदलना होगा। पुस्तकालयों के बजट को अक्सर गैर-जरूरी खर्च मान लिया जाता है, जबकि सड़क, अस्पताल और विद्यालयों की तरह पुस्तकालय भी बुनियादी सार्वजनिक संस्थान हैं, जिनका प्रभाव व्यक्ति और समाज के दीर्घकालिक विकास पर पड़ता है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 और 'नेशनल मिशन ऑन लाइब्रेरीज' जैसी पहलों ने इस दिशा में सकारात्मक कदम उठाए हैं, लेकिन इनकी सफलता के लिए राज्यों में पर्याप्त बजट, स्पष्ट नीति और एक मजबूत पुस्तकालय कानून का होना अनिवार्य है।

पुस्तकालयों को स्थानीय समाज की गतिविधियों का जीवंत केंद्र बनाना होगा। पुस्तक चर्चा, लेखक से संवाद, कहानी सत्र, कविता पाठ, विज्ञान क्लब, स्थानीय इतिहास पर व्याख्यान, डिजिटल साक्षरता और युवा नवाचार मंच जैसी पहलें पुस्तकालयों में जान फूंक सकती हैं। देहरादून का 'दून पुस्तकालय एवं शोध केन्द्र' इसका एक बेहतरीन उदाहरण है, जहां सांस्कृतिक कार्यक्रमों, गोष्ठियों और संवादों के जरिए पुस्तकालय को एक जीवंत सांस्कृतिक केंद्र के रूप में विकसित किया गया है। निस्संदेह, पढ़ने की आदत बचपन से ही विकसित होती है। यदि घर और विद्यालय में पढ़ने का अनुकूल वातावरण मिले, तो बच्चों में कल्पनाशीलता, संवेदनशीलता और स्वतंत्र चिंतन का विकास होता है। इसके साथ ही, मुद्रित पुस्तकों और डिजिटल सामग्री को एक-दूसरे का पूरक बनाकर स्थानीय इतिहास और लोक साहित्य का डिजिटलीकरण करना पुस्तकालयों को एक नई प्रासंगिकता दे सकता है। अंततः, सार्वजनिक पुस्तकालय किसी भी देश की वास्तविक बौद्धिक पूंजी हैं। इन्हें मजबूत करना केवल पुरानी पुस्तकों की रक्षा करना नहीं, बल्कि पठन संस्कृति, स्वतंत्र चिंतन और एक स्वस्थ लोकतांत्रिक समाज के भविष्य को सुरक्षित करना है।

चंद्रशेखर तिवारी

आंकड़ों की बाजीगरी और यथार्थ की अनदेखी

राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य एवं कल्याण सर्वे का उद्देश्य देश में प्रजनन दर, मृत्यु दर, परिवार नियोजन और मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य पर आवश्यक आंकड़े प्रदान करना है। यह सर्वे हर पांच साल में स्वास्थ्य व परिवार कल्याण में उभरती चुनौतियों को दर्शाते हुए भविष्य के नीति निर्धारण को डेटा-बेस्ड व वैज्ञानिक आधार प्रदान करता है। इसके चक्र-6 के आंकड़े हाल ही में मई में प्रकाशित किए गए।

उल्लेखनीय है कि यह सर्वे ही भविष्य के नीति निर्धारण का आधार बनता है। इसके बिना नागरिक तथा नीति-निर्धारक आदि सरकार की नीतियों का विश्लेषण आंकड़ों की बजाय सरकारी आख्यानों के आधार पर करने को मजबूर होते हैं। लेकिन इन आंकड़ों को जारी करने में जान-बूझकर विलंब तथा अनावश्यक हस्तक्षेप के जरिए सरकार ने इसकी नीतियों के सर्वे-आधारित विश्लेषण के आधार को ही छीन लिया।

एनएफएचएस-5 (2019 से 2021) व इससे पहले के सर्वे चक्र में 131 प्रमुख संकेतकों की स्थिति दिखाई जाती रही। ताज़ा सर्वे में केवल 101 संकेतकों की स्थिति ही दर्शाई गई है। इस तरह कुछ प्रमुख संकेतकों को नजरअंदाज कर दिया गया है; जैसे- खून की कमी की व्याप्ति, शिशु मृत्यु दर, प्रजनन क्षमता तथा आबादी, जन्म के समय लिंगानुपात, रसोई के स्वच्छ ईंधन तक पहुंच, सैनिटाइजेशन कवरेज, एचआईवी व कैंसर संबंधी जांच आदि। इस तरह से उन सभी संकेतकों को लगभग निकाल दिया गया, जिन पर सरकार का प्रदर्शन सबसे कमजोर था।

यह बहु-प्रचारित योजनाओं की जांच-परख से बचने और छांट-छांट कर गरीबी, शिशु पोषण और महिला स्वास्थ्य की विफलताओं पर पर्दा डालने का मसला भी है। व्यापक स्तर पर यह इस तथ्य को छिपाने की ही कोशिश है कि बाजार सुधार के नाम पर चलाई जा रही नीतियों से हम राष्ट्र के तौर पर निर्धनतम तबकों जैसे महिलाएं, बच्चे और गरीबों की कीमत पर निजी अस्पतालों और स्वास्थ्य उद्योग को फायदा पहुंचाने में लगे हुए हैं। एनएफएचएस-6 में केवल पहले से चले आ रहे संकट को हटाया ही नहीं, बल्कि विकृत स्वास्थ्य प्राथमिकताओं के रुझानों को पोषित करने के लिए कुछ नए संकेतक तक भी जोड़ दिए गए हैं। इनका जोर अल्पपोषण की बजाय जीवनशैलीगत संकेतकों की तरफ ज्यादा है, मसलन- मोटापा। याद रहे, दक्षिण एशिया में गैर-संचारी रोगों से होने वाली मौतों की आधी संख्या भारत में होती है। फिर भी, नीतिगत प्राथमिकताओं का अल्पपोषण से मोटापे की तरफ मोड़ना एक खास दृष्टिकोण का संकेतक है। हमारे यहां 5 वर्ष से कम आयु के बच्चों में ठिगनापन 29.3 प्रतिशत पर है, दुबलापन 31.8 प्रतिशत, अल्प विकास 19.0 प्रतिशत तथा अत्यधिक अल्प विकास 5.02 प्रतिशत पर है।

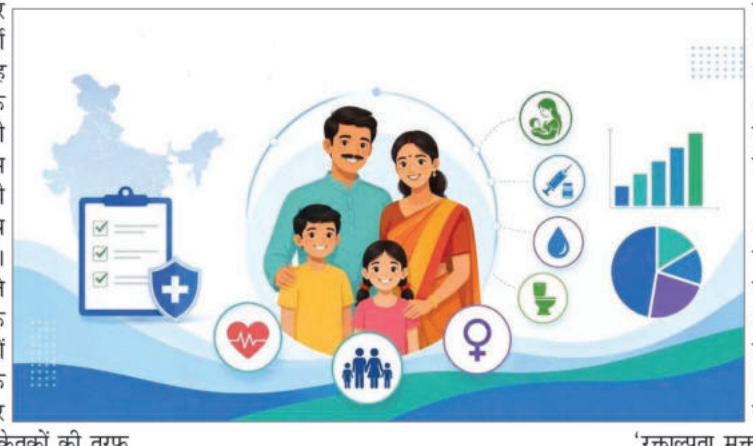

देश में 6 से 23 महीने के बच्चों में केवल 15.3 प्रतिशत को ही पर्याप्त खुराक मिल पाती है। स्तनपान से पोषण 63.7 प्रतिशत से घटकर 55 प्रतिशत पर आ गया है। मोटे तौर पर हर पांच में से एक स्त्री-पुरुष अब भी दुबला या अंडरवेट है। स्वास्थ्य विशेषज्ञ इस स्थिति को महामारिगत ध्रुवीकरण कहते हैं, जहां किसी आबादी के बीच स्वास्थ्य संबंधी नतीजे समूहों के बीच बढ़ते पैमाने पर विभाजित होते जाते हैं। इसमें रुग्णता, जीवन प्रत्याशा और स्वास्थ्य रक्षा तक पहुंच के संबंध में समूहों के बीच खाई बढ़ती जाती है। रक्त अल्पता के आंकड़ों को हटाकर मोटापे के आंकड़े को जोड़ना स्वास्थ्य स्थिति की अधूरी तस्वीर ही सामने लाता है, जिसमें पोषणगत बुनियादी विफलताओं को किनारे किया जाता है।

सबसे नाटकीय ढंग से रक्ताल्पता के आंकड़ों को नजरअंदाज किया गया है। एनएफएचएस-5 में संकट बढ़ने की जानकारी सामने आई थी। 5 साल से कम आयु के बच्चों में खून की कमी 58.6 प्रतिशत से बढ़कर 67.1 प्रतिशत हो गई थी और 15 से 49 वर्ष आयु तक की महिलाओं के बीच यह 57 प्रतिशत थी, जिससे 'रक्ताल्पता मुक्त भारत योजना' पर सवाल उठे थे। इसी प्रकार, जन्म के समय लिंगानुपात हटा दिया गया है, जबकि यह लैंगिक भेदभाव का सबसे सशक्त संकेतक माना जाता है। एक स्वास्थ्य सर्वे जवाबदेही का औजार भी है। इसमें से सरकार की नीतियों की विफलताएं सामने लाने वाले संकेतकों को हटा देना गंभीर मसला है। हटाए जाने का पैटर्न भी अपनी कहानी कहता है। मिसाल के तौर पर, प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना 2016 में गरीब महिलाओं को रसोई के कनेक्शन मुहैया करवाने के लिए शुरू की गई थी। एनएफएचएस-5 में पता चला था कि 40 प्रतिशत परिवारों को अब भी ईंधन के लिए चूल्हा फूंकना पड़ता है। अब एनएफएचएस-6 से इसे हटा दिया गया है।

डॉ. जगमती सांगवान

इसी प्रकार, स्वच्छ भारत मिशन में 10 करोड़ शौचालय बनवाने के बाद 2019 में सरकार ने भारत को खुले में शौच से मुक्त घोषित कर दिया था। इसके बावजूद एनएफएचएस-5 में पता चला था कि 19 प्रतिशत परिवारों को शौचालय की सुविधा मिली ही नहीं थी। उसे भी चक्र-6 में हटा दिया गया है। स्त्री व पुरुष नलबंदी में 70:1 का भारी अंतर दशकों से जस का तस बना हुआ है। बताया जाता है कि इंटरनेशनल इंस्टीट्यूट फॉर पॉपुलेशन साइंसेज के निदेशक, प्रो. के.एस. जेम्स की देखरेख में पेश किए जा रहे कुछ आंकड़ों से सरकार नाखुश थी। जेम्स ने इन आंकड़ों को हटाने से मना कर दिया था और उन्हें निलंबित कर दिया गया। सार्वजनिक आलोचना के बाद उनका निलंबन वापस लेकर उनसे इस्तीफा मांग लिया गया।

महाकाल की शोभा यात्रा में श्यामू की जगह ले सकता मैकेनिकल हाथी...

माही की गूंज, उज्जैन।

बाबा महाकाल की शाही सवारी का नेतृत्व करने के लिए कोई युवा हाथी नहीं है। ऐसे में मंदिर ट्रस्ट को इसका समाधान शायद एक रोबोट हाथी में मिल गया है। जानवरों के अधिकारों के लिए काम करने वाले संगठन पेटा ने ज्योतिर्लिंग मंदिर को असली हाथी के आकार का एक मैकेनिकल हाथी तोहफे में देने का प्रस्ताव दिया है।

संगठन ने दावा किया है कि, यह महाकाल की पवित्र शोभायात्राओं में असली हाथी की जगह ले सकता है और साल भर भक्तों की भीड़ को आकर्षित कर सकता है, बिना किसी जानवर को तकलीफ पहुंचाए।

समिति के सामने प्रस्ताव

पेटा के सीनियर पॉलिसी और लीगल एडवाइजर विक्रम चंद्रवंशी ने बताया कि उन्होंने मंदिर ट्रस्ट और मध्य प्रदेश के अधिकारियों के सामने यह प्रस्ताव रखा है। कुछ आपत्तियों के बावजूद, देश भर के 40 से ज्यादा मंदिरों में रोबोटिक हाथी अपनाए जा चुके हैं, जिनमें केरल और कर्नाटक के मंदिर भी शामिल हैं। पेटा अब तक ऐसे 29 हाथी दान कर चुका है।

हाल ही में महाराष्ट्र के पंढरपुर और नवी मुंबई के इस्कॉन मंदिरों और यूपी के कानपुर में ऐसे हाथी दिए गए हैं। यहां तक कि तेलंगाना सरकार ने भी अपने आधिकारिक समारोहों के लिए एक रोबोटिक हाथी चुना है।

श्यामू की खराब है तबीयत

यह प्रस्ताव ऐसे समय में आया है, जब महाकाल मंदिर प्रशासन और वन विभाग, मंदिर के 32 साल के हाथी श्यामू की बिगड़ती सेहत संभालने में मुश्किलों का सामना कर रहे हैं। श्यामू लंबे समय से श्रावण की शोभायात्राओं का नेतृत्व करता रहा है।

उज्जैन डीएफओ ने कहा कि, यह एक बहुत खतरनाक बीमारी है। उन्होंने कहा कि तीन दिन पहले एक गहन मेडिकल जांच पास करने के बाद, 67 साल की हथिनी सुमा ने श्यामू की जगह ले ली है।

वहीं, पेटा के राज्य अधिकारियों ने आग्रह किया है कि वे औपचारिक शोभायात्राओं के लिए मैकेनिकल हाथियों पर विचार करें। संगठन का कहना है कि इससे जानवरों की भलाई या लोगों की सुरक्षा से समझौता किए बिना परंपरा को बनाए रखा जा सकता है। उन्होंने 26 जुलाई की इंदौर की घटना का हवाला दिया है, जिसमें औपचारिक कार्यक्रम के लिए उज्जैन से लाए गए हाथी ने 49 साल के ऑटो-रिक्शा ड्राइवर को कुचल दिया था।

दोनों को है खतरा

पेटा ने कहा कि भीड़-भाड़ वाली सार्वजनिक जगहों पर हाथियों को घुमाने से जानवरों और लोगों, दोनों को ऐसे ही खतरों का सामना करना पड़ता है, जिनसे बचा जा सकता है। उज्जैन में हाथियों की चिंता के बीच पेटा के इस प्रस्ताव पर भी ध्यान दिया जा रहा है।

चर्चा की जरूरत

महाकाल मंदिर समिति के चेयरमैन और उज्जैन कलेक्टर रोशन कुमार सिंह ने कहा कि, इस प्रस्ताव पर पुजारियों और दूसरे संबंधित लोगों के साथ चर्चा करने की जरूरत होगी, क्योंकि इस साल की शोभायात्राएं पहले ही शुरू हो चुकी है। हालांकि पुजारी अभी भी इसे लेकर सावधानी बरत रहे हैं।

दुर्घटना के बाद कलेक्टर का सजेली फाटक निरीक्षण

माही की गूंज, झाबुआ।

कलेक्टर डॉ. योगेश तुकाराम भरसट ने सजेली फाटक पर हुई हृदयविदारक दुर्घटना के पश्चात मौके पर पहुंचकर स्थल का निरीक्षण किया। इस दौरान उन्होंने निर्माणाधीन सड़क एवं आवागमन के लिए बनाए गए वैकल्पिक मार्ग की स्थिति का जायजा लेते हुए संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। कलेक्टर डॉ. भरसट ने निर्माणाधीन सड़क के कारण आवागमन के लिए उपयोग किए जा रहे वैकल्पिक मार्ग पर वर्षा के दौरान कीचड़ की स्थिति निर्मित न हो तथा आमजन को आवागमन में किसी प्रकार की परेशानी न आए, इसके लिए मुरम के साथ पर्याप्त मात्रा में गिट्टी एवं चूरी का उपयोग करने के निर्देश दिए। उन्होंने मार्ग को आवागमन के लिए सुगम एवं सुरक्षित बनाए रखने हेतु आवश्यक व्यवस्थाएं सुनिश्चित करने को कहा। कलेक्टर ने सजेली फाटक क्षेत्र में स्वीकृत 7 मीटर चौड़ी सीसी रोड के निर्माण कार्य की भी जानकारी ली। उन्होंने संबंधित अधिकारियों एवं निर्माण एजेंसी को कार्य में तेजी लाते हुए आगामी एक सप्ताह के भीतर सीसी रोड का निर्माण कार्य पूर्ण करने के निर्देश दिए। कलेक्टर ने अधिकारियों को निर्देशित किया कि निर्माण कार्य के दौरान यातायात व्यवस्था एवं आमजन की सुरक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी जाए तथा वैकल्पिक मार्ग की नियमित निगरानी करते हुए आवश्यकता के अनुसार तत्काल सुधार कार्य सुनिश्चित किया जाए।

महाकाल के आंगन में फिर आकार ले रहा है एक हजार वर्ष पुराना शिव मंदिर

माही की गूंज, उज्जैन।

विश्व प्रसिद्ध ज्योतिर्लिंग महाकाल मंदिर परिसर में विकास एवं निर्माण कार्यों के दौरान मिले करीब एक हजार साल पुराने शिव मंदिर के अवशेष अब फिर से आकार लेने जा रहे हैं।

वर्ष 2020-21 में मंदिर परिसर में की गई खोदाई के दौरान भूमि के नीचे से प्राचीन मंदिर का आधार भाग, गर्भगृह के अवशेष, शिवलिंग, नंदी, गणेश, मां चामुंडा, शार्दूल सहित कई महत्वपूर्ण प्रतिमाएं और स्थापत्य खंड मिले थे। पुरातत्व विभाग ने इन अवशेषों को सुरक्षित करते हुए उनका क्रमवार वर्गीकरण और नंबरिंग की थी।

अवशेषों के अध्ययन में मंदिर के भूमिज शैली में निर्मित होने के प्रमाण मिले। साथ ही भारवाही कीचक, कपोतिका, कुंभ भाग, स्तंभ, आमलक आदि स्थापत्य अवशेष भी मिले। पुरातत्व विशेषज्ञों के परीक्षण के बाद इन्हें एक ही स्थान पर संरक्षित कर रखा गया है। विभाग का मानना है कि इन अवशेषों के आधार पर प्राचीन मंदिर का पुनर्निर्माण किया जा सकता है। मंदिर के पुनर्निर्माण के लिए पुरातत्व विभाग ने निर्माण समिति का गठन किया है।

विशेषज्ञों के मार्गदर्शन में अवशेषों की नंबरिंग के आधार पर उन्हें जोड़कर मंदिर का मूल स्वरूप तैयार किया जा रहा है। जरूरत के अनुसार क्षतिग्रस्त पत्थरों के स्थान पर उसी प्रकृति के पत्थर लगाए जाएंगे। इसके लिए राजस्थान से विशेष कारीगर भी बुलाए गए हैं। विभाग को राजस्थान में मंदिर निर्माण में उपयोग होने वाला इसी प्रकृति का काला पत्थर मिला है।

प्रस्तावित मंदिर

36 से 37 फीट ऊंचाई का

योजना के अनुसार पुनर्निर्मित मंदिर की ऊंचाई करीब 36 से 37 फीट रहेगी। निर्माण में करीब 8 से 10 माह से लेकर डेढ़ वर्ष तक का समय लगने का अनुमान बताया गया है। विभिन्न चरणों में निर्माण लागत करीब 65 से 90 लाख रुपये आंकी गई है। पुरातत्व विभाग के अनुसार यह कार्य केवल मंदिर निर्माण नहीं, बल्कि महाकाल मंदिर के गौरवशाली प्राचीन इतिहास को पुनर्स्थापित करने का प्रयास है।

पुनर्निर्माण पूरा होने के बाद श्रद्धालु महाकाल परिसर में प्राचीन शैव स्थापत्य और करीब एक हजार वर्ष पुराने मंदिर के इतिहास को करीब से देख सकेंगे। इससे उज्जैन की धार्मिक विरासत के साथ पुरातात्विक महत्व को भी नई पहचान मिलने की उम्मीद है।

किराना दुकान से 16.82 लीटर संदिग्ध घी जब्त

माही की गूंज, खंडवा।

त्योहारों का मौसम शुरू होते ही खाद्य पदार्थों में मिलावट की आशंका को देखते हुए प्रशासन ने जांच अभियान तेज कर दिया है। मंगलवार को खाद्य सुरक्षा विभाग की टीम ने बड़ा बम चौक स्थित वैशाली किराना दुकान पर जांच की। यहां बिक्री के लिए रखे दो अलग-अलग ब्रांड के घी के नमूने लिए गए। साथ ही 16.82 लीटर घी का भंडार जब्त किया गया, जिसकी अनुमानित कीमत 14 हजार 744 रुपये बताई गई है।

खाद्य सुरक्षा अधिकारी राधेश्याम गोले के अनुसार इन दिनों दूध एवं दुग्ध उत्पादों की विशेष जांच की जा रही है। इसी अभियान के तहत वैशाली किराना का निरीक्षण किया गया। दल ने दुकान से गोवर्धन प्योर काऊ घी तथा डेयरी बेस्ट एगमार्क घी के नमूने एकत्र किए हैं। दोनों नमूनों को परीक्षण के लिए प्रयोगशाला भेजा जाएगा।

जांच के दौरान 12.5 लीटर गोवर्धन प्योर काऊ घी तथा 4.32 लीटर डेयरी बेस्ट एगमार्क घी का भंडार जब्त किया गया। जब्त सामग्री दुकान संचालक सुरेश चावला की सुपुर्दगी में रखी गई है। जांच प्रतिवेदन प्राप्त होने तक इस घी की बिक्री पर रोक रहेगी।

खाद्य सुरक्षा अधिकारी ने बताया कि त्योहारों को देखते हुए प्रदेशभर में खाद्य पदार्थों में मिलावट के विरुद्ध विशेष अभियान चलाया जा रहा है। उन्होंने कहा कि इंदौर और भोपाल में गोवर्धन घी के कुछ नमूने परीक्षण में अमानक पाए जाने की जानकारी मिलने के बाद एहतियात के तौर पर खंडवा में भी इस ब्रांड के घी के नमूने लिए गए हैं।

अधिकारियों के अनुसार, खंडवा से भेजे गए नमूनों की प्रयोगशाला जांच रिपोर्ट आने के बाद ही घी की गुणवत्ता और वास्तविक स्थिति स्पष्ट हो सकेगी।

6 पिस्टल और 9 मैगजीन के साथ अंतरराज्यीय हथियार तस्कर गिरफ्तार

माही की गूंज, खरगोन।

किशनगंज पुलिस ने मंगलवार को 32 बोर की 6 देशी पिस्टल और 9 मैगजीन के साथ एक आरोपी को गिरफ्तार किया है।

गिरफ्तार आरोपी राजस्थान निवासी मुकेश कुमार उर्फ मुक्कु (28) बताया गया है, जो अवैध हथियारों की तस्करी में वाहक के रूप में काम कर रहा था। पुलिस ने उसके कब्जे से हथियारों सहित करीब 1.40 लाख रुपये की सामग्री जब्त की है।

पुलिस के अनुसार सोमवार देर रात करीब 3 बजे संदिग्ध अवस्था में घूम रहे मुकेश को रोकने का प्रयास किया गया। पुलिस को देखते ही उसने भागने की कोशिश की, लेकिन घेराबंदी कर उसे पकड़ लिया गया। उसके लाल-काले रंग के बैग की तलाशी लेने पर 32 बोर की 6 देशी पिस्टल, 9 मैगजीन तथा एक मोबाइल फोन बरामद हुआ।

पूछताछ के दौरान आरोपी ने बताया कि उसने यह हथियारों की खेप खरगोन जिले के सिगनूर निवासी सिकलीगर उपकार सिंह चावला से 70 हजार रुपये में खरीदी थी। वह यह खेप अपने साथी सतपाल नायक को पहुंचाने जा रहा था। जांच में यह भी सामने आया है कि आरोपी इससे पहले भी दो बार हथियारों की आपूर्ति कर चुका है।

पुलिस जांच में पता चला कि आरोपी मुकेश के खिलाफ राजस्थान और पंजाब में हत्या के प्रयास, आयुध अधिनियम तथा मादक पदार्थ नियंत्रण कानून से जुड़े कुल 7 आपराधिक प्रकरण दर्ज हैं। मामले में मुख्य आपूर्तिकर्ता उपकार सिंह चावला और खरीदार सतपाल नायक फिलहाल फरार हैं, जिनकी तलाश जारी है।

पुलिस अधिकारियों ने बताया कि मामले की विस्तृत जांच की जा रही है तथा फरार आरोपियों की गिरफ्तारी के लिए संभावित ठिकानों पर दबिश दी जा रही है। कार्रवाई में किशनगंज थाना प्रभारी अमित कुमार एवं उनकी टीम की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

निकाली तिरंगा रैली

माही की गूंज, मंदसौर।

हर घर तिरंगा अभियान सीतामऊ नगर परिषद द्वारा तिरंगा रैली निकाली गई। इस दौरान तिरंगा रैली नगर की आराध्य देवी माँ मोड़ी माताजी मंदिर प्रांगण से भव्य तिरंगा यात्रा देशभक्ति के गीत के माध्यम से एवं देश भक्ति के जयकारो, उद्घोष के साथ देशभक्तों द्वारा उत्साह पूर्वक यात्रा प्रारंभ होकर नगर के मुख्य मार्गों में होकर नगर परिषद प्रांगण में यात्रा का समापन हुआ, यात्रा में विभिन्न स्थानों पर नगर नागरिकों द्वारा यात्रा का स्वागत पुष्प वर्षा कर की गई। इस अवसर आयोजित कार्यक्रम में नप अध्यक्ष मनोज शुक्ला द्वारा नागरिकों को स्वच्छता की शपथ दिलाई गई।

नर्मदा से बदलेगी गांवो की तस्वीर

माही की गूंज, धार।

कुक्षी माइक्रो उद्वहन सिंचाई परियोजना को नर्मदा घाटी विकास विभाग द्वारा 14 जनवरी 2020 को स्वीकृति दी गई थी। उस समय योजना में कुक्षी और डही तहसील के 175 गांव शामिल थे। इसके बाद वर्ष 2022 में परियोजना का विस्तार करते हुए मनावर और गंधवानी तहसील के कुछ गांवों को भी इसमें शामिल किया गया।

इससे लाभान्वित गांवों की संख्या बढ़कर 247 हो गई। वहीं परियोजना की स्वीकृत लागत भी 2,117 करोड़ से बढ़कर 2,717 करोड़ रुपए हो गई।

800 मीटर लंबी नहर

संपवेल निर्माण का कार्य प्रारंभ कुक्षी माइक्रो उद्वहन सिंचाई परियोजना के तहत नर्मदा किनारे डूब क्षेत्र के गांव चिखल्दा की खेड़ा बस्ती के समीप संपवेल और पंप हाउस के निर्माण का कार्य निर्माण एजेंसी ने प्रारंभ कर दिया है। नर्मदा नदी से संपवेल तक पानी लाने के लिए करीब 800 मीटर लंबी नहर का निर्माण किया जाना है।

इसके लिए बड़ी मशीनों से गहरी खोदाई के साथ चट्टानी क्षेत्र में ब्लास्टिंग का कार्य भी किया जा रहा है। जमीन की सतह से करीब 35 से 50 मीटर तक गहराई में खोदाई की जा रही है।

बनाई मिट्टी की दीवार

नर्मदा नदी से संपवेल तक पानी पहुंचाने के लिए बनाई जा रही नहर को इस तरह तैयार किया जा रहा है कि, नर्मदा का जलस्तर 111 मीटर तक होने पर भी नदी से संपवेल तक पानी पहुंचाया जा सके। वर्तमान में नर्मदा का जलस्तर तेजी से बढ़ रहा है और तय समय से पहले ही बैकवाटर भरने लगा है।

ऐसे में जिस स्थान पर संपवेल और नहर का निर्माण कार्य चल रहा है, वहां नर्मदा का बैकवाटर 136 मीटर के जलस्तर के बाद पहुंचने लगता है। इससे निर्माण कार्य प्रभावित होने की आशंका है।

बैकवाटर को निर्माण स्थल तक पहुंचने से रोकने के लिए निर्माण एजेंसी ने कार्यस्थल के आसपास करीब डेढ़ किलोमीटर लंबी और 15 से 20 फीट ऊंची मिट्टी की दीवार बनाई है, ताकि बढ़ते बैकवाटर से निर्माण कार्य प्रभावित न हो।

किसानों और आमजन को यह लाभ

धार जिले की कुक्षी, डही, मनावर और गंधवानी तहसीलों के 247 गांवों की करीब 75 हजार हेक्टेयर कृषि भूमि को सिंचाई के लिए पानी उपलब्ध कराया जाएगा। परियोजना के तहत प्रत्येक दो हेक्टेयर कृषि भूमि के लिए एक वाल्व लगाया जाएगा, जिसे माइक्रो सिंचाई पद्धति से जोड़ा जाएगा।

साथ ही जिन गांवों से परियोजना की पेयजल पाइपलाइन गुजरेगी और वहां जलसंकट की स्थिति होगी, उन गांवों को रा वाटर कनेक्शन उपलब्ध कराया जाएगा।

तालाबों को भी भरा जाएगा

इसके अलावा पाइपलाइन के मार्ग में आने वाले छोटे-बड़े करीब 50 तालाबों को भी परियोजना के माध्यम से भरा जाएगा। इस तरह परियोजना से क्षेत्र को सिंचाई, पेयजल और तालाबों में पानी भरने के रूप में तीन प्रमुख लाभ मिलेंगे।

नर्मदा घाटी विकास विभाग कार्यपालन यंत्री प्रदीप मुझाल्दा ने बताया कि, कार्य तेजी से किया जा रहा है परियोजना को पर्यावरण स्वीकृति मिलने में देरी हुई थी। अब बाद तेजी से कार्य किया जा रहा है। पाइपलाइन के अलावा संपवेल निर्माण का बेस बनाया जा रहा है।

प्रधानमंत्री आवास योजना में नहीं मिल रहा पात्रों को लाभ

सरपंच-उपसरपंच ओर रोजगार सहायक के परिवार के नाम किया गया जियो टैग

माही की गूंज, पेटलावद।
राकेश गेहलोत

पेटलावद विकासखंड की ग्राम पंचायत बरवेट में प्रधानमंत्री आवास योजना में बड़ा घपला सामने आया है। यहां पात्रों को योजना का लाभ तो नहीं मिला लेकिन ग्राम पंचायत सरपंच, उपसरपंच ओर सचिव सहित ऐसे लोगों को योजना का लाभ देने के लिए जियो टैग किया गया जो इनके रिश्तेदार ही नहीं परिवार के ही सदस्य है या फिर उनके पहले से मकान पक्के बने हुए हैं।

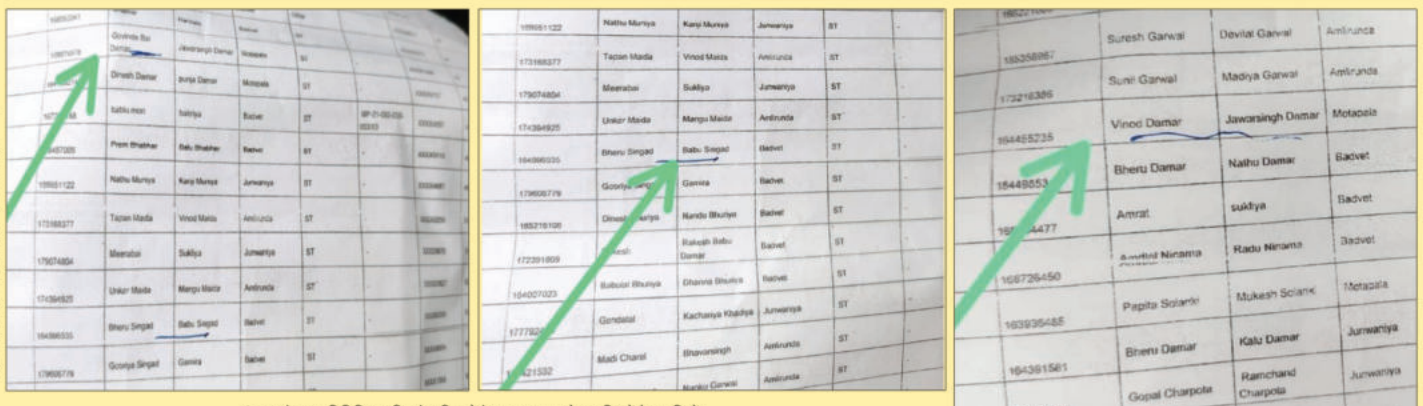

पंचायत के जनप्रतिनिधि व सचिव के परिजनो के नाम आवास योजना जिओं टैक सुचि में।

मामला पूर्व में भी सामने आया था जब ईश्वर पाटीदार द्वारा बरवेट पंचायत द्वारा आवास योजना का लाभ पात्र होने के बाद भी नहीं दिए जाने ओर ग्राम पंचायत में अपात्रों को लाभ देने की शिकायत की थी। शिकायत के बाद जांच के नाम पर जनपद पंचायत का दल बरवेट पहुंचा और इश्वर पाटीदार के मकान की जांच पड़ताल की। वही जिन लोगों के जियो टैग हुए या मकान स्वीकृत हुए उनमें से किनके मकान बने हुए है उनके मकान दिखाने के लिए जांच दल ने दबाओ बनाया, जबकी स्वीकृत सूची से जांच दल को जांच करनी थी। दूसरी ओर ईश्वर को मकान स्वीकृत नहीं होने के बाद उसको मकान की जगह खेत-तालाब योजना का लाभ देने का झांसा देकर शिकायत बंद करवाने का प्रयास किया गया।

चार बार कलेक्टर को दिया गया आवेदन, नहीं हुई कार्रवाई

बरवेट निवासी सुरेश पाटीदार द्वारा जिला कलेक्टर झाबुआ को जनसुनवाई सहित कुल चार बार शिकायत दर्ज करवा कर आवास योजना में पात्र होने के बाद भी योजना का लाभ नहीं मिलने की शिकायत दर्ज करवाई लेकिन अब तक कोई निराकरण नहीं हुआ। मंगलवार को जन सुनवाई कार्यक्रम में एक बार फिर शिकायत की गई। जहां से कहा गया कि, आप पेटलावद जाइए आपकी पूरी सुनवाई होगी। लेकिन जब शिकायतकर्ता पेटलावद जनपद पंचायत में आवास योजना के कार्यालय पहुंचा तो उपस्थित जिम्मेदार कर्मचारियों ने जवाब देना या आवश्वशन देना तो ठीक सीधे मुंह बात तक नहीं की। उल्टा शिकायत झाबुआ करने की बात करते हुए कहा कि, जिसको शिकायत की है जवाब भी हम उनको ही देगें। जनपद पंचायत में ज्यादातर कर्मचारियों की स्थिति यही है, शिकायत होने के बाद शिकायतकर्ता का निराकरण करने की बजाए उसे ओर प्रताड़ित ओर परेशान किया जाता है।

जिम्मेदार खुद ले रहे लाभ

ग्राम पंचायत द्वारा योजना के लाभ के लिए जियो टैग की सूची शिकायतकर्ता द्वारा निकाली गई तो उसमें चौंकाने वाली जानकारी सामने आई। योजना के लाभ के जारी नाम की सूची में सरपंच की पत्नी, रोजगार सहायक के बेटे ,सहित उपसरपंच के परिवार के नाम के जियो टैग किए हुए थे। इससे साफ है कि, योजना के लाभ के नाम पर खुली लेन-देन ओर भ्रष्टाचार किया जा रहा है और जियो टैग के नाम पर वसूली हो रही है। जो लोग पैसा दे रहे है उनका काम हो रहा है और जो पात्र वंचित है ओर योजना के लाभ के लिए प्रशासन से गुहार लगा रहे है उनको जान बुझ कर योजना का लाभ नहीं दिया जा रहा है। मामले की जांच की जांच हो तो पेटलावद विकास खंड में कई पंचायतों में यही खेल चल रहा है ओर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के हर व्यक्ति को पक्का घर योजना पर पानी फेर कर भ्रष्टाचार किया जा रहा है।

जनपद पंचायत में जमे आवास योजना के अधिकारीयो की साठ-गाठ ग्राम पंचायत के सरपंच,सचिव ओर रोजगार सहायक से बनी हुई है। जिससे योजना का लाभ किसे देना है इसका पूरा खाका कागजों पर बिना जमीनी स्तर पर जांच पड़ताल के ऑफिस में बैठ कर अधिकारी द्वारा किया जा रहा है।

पात्र हितग्राही को नही मिल रहा लाभ।

नाइजीरियाई महिला के कब्जे से दो किलोग्राम ड्रग जप्त

माही की गूंज, रतलाम।

दिल्ली से मुंबई जा रही ट्रेन में रतलाम जंक्शन पर राजस्व आसूचना निदेशालय (डीआरआइ) द्वारा एक नाइजीरियाई महिला के कब्जे से दो किलोग्राम एम्फेटामाइन ड्रग जब्त किए जाने की कार्रवाई ने दिल्ली-मुंबई कारिडोर पर सक्रिय अंतरराष्ट्रीय ड्रग नेटवर्क की ओर फिर से ध्यान खींचा है।

प्रारंभिक जांच में न महिला का रतलाम से संबंध सामने आया है और न ही बरामद मादक पदार्थ का स्रोत रतलाम बताया गया है। उसे केवल खूफिया सूचना के आधार पर रतलाम जंक्शन पर इंटरसेप्ट किया गया। ऐसे में सवाल उठता है कि क्या रतलाम ड्रग का नया हब बन रहा है या फिर देश के सबसे व्यस्त कॉरिडोर पर सुरक्षा एजेंसियों का सबसे महत्वपूर्ण इंटरसेप्शन पाइंट बन चुका है।

रतलाम की भौगोलिक स्थिति इसे रणनीतिक रूप से बेहद महत्वपूर्ण बनाती है। पश्चिम रेलवे का प्रमुख जंक्शन होने के कारण यहां से दिल्ली-मुंबई मुख्य रेल मार्ग गुजरता है। इसके साथ ही दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस-वे, राष्ट्रीय राजमार्ग और राजस्थान, गुजरात तथा मध्यप्रदेश की अंतराज्यीय कनेक्टिविटी इसे उत्तर और पश्चिम भारत के बीच एक अहम ट्रांजिट कारिडोर बनाती है। यही वजह है कि डीआरआइ, नारकोटिक्स कंट्रोल ब्यूरो (एनसीबी) और मध्यप्रदेश पुलिस की नजर इस क्षेत्र पर लगातार बनी हुई है।

रतलाम से दिल्ली और मुंबई मार्ग पर औसतन हर एक से दो घंटे में प्रीमियम या सुपरफास्ट ट्रेनें उपलब्ध रहती हैं। इंदौर, उज्जैन, दाहोद, और नागदा के लिए नियमित पैसेंजर ट्रेनें दिनभर में कई बार चलती हैं। यहां से दिल्ली, मुंबई, जयपुर, इंदौर, अहमदाबाद और भोपाल जैसे प्रमुख शहरों के लिए कनेक्टिविटी आसान है। हालांकि पिछले कुछ महीनों के घटनाक्रम से स्पष्ट है कि तस्कर अब रतलाम का उपयोग केवल माल गुजारने के लिए नहीं, बल्कि अवैध निर्माण (मैन्युफैक्चरिंग) के लिए भी कर रहे हैं।

ड्रग सिंडिकेट पर रिकॉर्ड कार्रवाई

छः महीनों में रतलाम जिले में एमडी (मेफेड्रोन) के खिलाफ अब तक की सबसे बड़ी कार्रवाई हुई। पुलिस ने आठ थाना क्षेत्रों में 23 प्रकरण दर्ज कर 81 आरोपितों को गिरफ्तार किया तथा 14.175 किलोग्राम एमडी जब्त की, जो पिछले दो वर्षों की संयुक्त बरामदगी से भी अधिक है। वहीं पहले पांच महीनों में एनडीपीएस के 41 प्रकरण दर्ज कर 125 आरोपितों को गिरफ्तार किया गया।

बारिश से बढ़ी चिंता : पीडब्ल्यूडी पुल की सुरक्षा दीवार धंसी, कटाव से हादसे का खतरा

माही की गूंज, खंडवा।

पंधाना से लगभग एक किलोमीटर दूर झिरनिया मार्ग पर कुंडिया गांव के पास स्थित पुल की सुरक्षा दीवार का एक हिस्सा लगातार हो रही बारिश के कारण धंस गया है। पुल के किनारे मिट्टी का कटाव बढ़ने से सड़क के पास खतरे की स्थिति बन गई है। इससे मार्ग से गुजरने वाले वाहन चालकों और राहगीरों को दुर्घटना की आशंका बनी हुई है।

लगातार वर्षा के चलते पुल के किनारे की मिट्टी बहने से सुरक्षा दीवार प्रभावित हुई है। यदि समय रहते इसकी मरम्मत नहीं की गई और बारिश का सिलसिला जारी रहा, तो कटाव और बढ़ सकता है। ऐसी स्थिति में पुल की मजबूती और सुरक्षा पर भी असर पड़ने की आशंका है।

प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के अभियंता अनिल निगवाल ने बताया कि संबंधित पुल का निर्माण लोक निर्माण विभाग द्वारा कराया गया था। लगातार बारिश के कारण पुल की सुरक्षा दीवार क्षतिग्रस्त हुई है। वर्तमान में इसी पुल से प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के मार्ग का सरेखण निकल रहा है तथा सड़क निर्माण कार्य भी प्रगति पर है।

उन्होंने बताया कि सूचना मिलने के बाद मौके का निरीक्षण किया गया। वर्षा के कारण मिट्टी का कटाव बढ़ा है। सुरक्षा दीवार के पुनर्निर्माण के लिए संबंधित ठेकेदार को आवश्यक निर्देश दिए गए हैं।

प्रशासन द्वारा क्षतिग्रस्त हिस्से के पास सुरक्षा अवरोधक लगाकर वाहन चालकों को सतर्क किया गया है। फिलहाल मार्ग पर यातायात जारी है

और उसे बंद नहीं किया गया है। हालांकि बारिश के दौरान कटाव बढ़ने की संभावना को देखते हुए लोगों से सावधानीपूर्वक आवागमन करने की अपील की गई है।

स्थानीय नागरिकों का कहना है कि सुरक्षा दीवार की शीघ्र मरम्मत आवश्यक है। यदि वर्षा के बीच कटाव बढ़ता रहा तो पुल के किनारे का हिस्सा और धंस सकता है, जिससे भारी वाहनों के लिए भी खतरा उत्पन्न हो सकता है। लोगों ने संबंधित विभाग से जल्द से जल्द मरम्मत कार्य पूरा कराने की मांग की है।

होटल में सराफा व्यापारी की संदिग्ध मौत

माही की गूंज, रतलाम।

नगर के सराफा व्यापारी (46) रवि मोठिया की मंगलवार देर रात सैलाना रोड स्थित एक होटल के कमरे में संदिग्ध परिस्थितियों में मौत हो गई। घटनास्थल से विषैले पदार्थ के चार खाली पाउच मिलने के बाद शुरुआती जांच में जहरीला पदार्थ सेवन करने की आशंका जताई जा रही है।

रवि मोठिया मंगलवार शाम घर से निकले थे, लेकिन देर रात तक वापस नहीं लौटे। तलाश शुरू की तो उनकी कार प्रेम वाटिका होटल के बाहर खड़ी मिली। सूचना मिलने पर पुलिस मौके पर पहुंची। होटल का कमरा अंदर से बंद था, जिसे होटल प्रबंधन की मदद से खुलवाया। अंदर रवि मोठिया मृत अवस्था में मिले। पुलिस ने एफएसएल टीम को बुलाकर साक्ष्य जुटाए और शव को मेडिकल कॉलेज भिजवाया।

कमरे की तलाशी के दौरान पुलिस को विषैले पदार्थ के चार खाली पाउच मिले। कमरे में उल्टी के निशान भी मिले और बिस्तर भी गंदा था। कमरे से एक कागज भी मिला, जिस पर कुछ लिखा हुआ बताया जा रहा है। हालांकि उल्टी लगने से वह पूरी तरह भीगकर खराब हो गया है। पुलिस ने कागज जब्त कर उसे सुरक्षित तरीके से संरक्षित कर उस पर लिखी सामग्री पढ़ने का प्रयास किया जाएगा। रवि मोठिया चांदनी चौक में महावीर ज्वेलर्स के नाम से आभूषण व्यवसाय संचालित करते थे।

मुख्यमंत्री कल दौरे पर, तलुन-बोरलाय सहित विभिन्न कार्यक्रमों में होंगे शामिल

माही की गूंज, बड़वानी।

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 14 अगस्त को बड़वानी जिले के प्रवास पर रहेंगे। मुख्यमंत्री के प्रस्तावित कार्यक्रमों को लेकर प्रशासन द्वारा सभी तैयारियां पूर्ण कर ली गई हैं। सुरक्षा, यातायात और वाहन पार्किंग व्यवस्थाओं को लेकर अधिकारियों ने कार्यक्रम स्थलों का निरीक्षण कर आवश्यक निर्देश जारी किए हैं। प्राप्त जानकारी के अनुसार मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ग्राम तलुन स्थित हेलीपैड पर पहुंचेंगे। इसके बाद वे सड़क मार्ग से खाटू श्याम मंदिर जाकर दर्शन करेंगे। मुख्यमंत्री जिले में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों में भाग लेने के साथ राज्य सरकार द्वारा संचालित जन विश्वास अभियान की प्रगति की भी समीक्षा करेंगे। मुख्यमंत्री के दौरे को देखते हुए प्रशासन और पुलिस विभाग द्वारा सुरक्षा के व्यापक इंतजाम किए गए हैं। हेलीपैड, विशिष्ट अतिथि मार्ग, प्रवेश एवं निकास मार्ग, वाहन पार्किंग स्थलों तथा सुरक्षा व्यवस्था को लेकर विशेष निगरानी रखी जा रही है। अधिकारियों को यातायात व्यवस्था सुचारू बनाए रखने तथा आमजन को किसी प्रकार की असुविधा न हो, इसके निर्देश दिए गए हैं। उल्लेखनीय है कि प्रदेश सरकार द्वारा प्रशासनिक पारदर्शिता और जन समस्याओं के त्वरित निराकरण के उद्देश्य से जन विश्वास अभियान संचालित किया जा रहा है। अभियान के अंतर्गत जनप्रतिनिधि और अधिकारी ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में पहुंचकर आमजन से संवाद कर रहे हैं तथा शासकीय योजनाओं के क्रियान्वयन की समीक्षा कर रहे हैं।

ॐ आकार की पहाड़ियों के बीच विराजे शिव, प्रकृति करती है भोलेनाथ का 24 घंटे प्राकृतिक जलाभिषेक

माही की गूंज ,सारंगी।
संजय उपाध्याय

सावन का पवित्र महीना आते ही भगवान भोलेनाथ के प्राचीन और चमत्कारी धामों में श्रद्धालुओं की भीड़ उमड़ने लगती है। झाबुआ जिले की पावन धरती पर स्थित बेकल्दा गांव के समीप पहाड़ियों की गोद में बसा चेनपुरी शिवकुंड धाम ऐसा ही एक अद्भुत और रहस्यमयी तीर्थ है, जहां प्रकृति स्वयं भगवान शिव की आराधना करती हुई प्रतीत होती है। यहां की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि, पहाड़ियों का प्राकृतिक स्वरूप ॐ की आकृति जैसा दिखाई देता है और ठीक उसके मध्य भगवान भोलेनाथ का पवित्र शिवलिंग विराजमान है। यह दृश्य श्रद्धालुओं के लिए किसी दिव्य चमत्कार से कम नहीं माना जाता।

पहाड़ियों के बीच शिवमय वातावरण

बेकल्दा गांव से करीब दो किलोमीटर दूर स्थित यह धाम घने जंगलों और ऊंची-नीची पहाड़ियों से घिरा हुआ है। यहां पहुंचते ही वातावरण की शांति, पक्षियों का मधुर कलरव, बहती ठंडी हवाएं और चारों ओर फैली हरियाली मन को आध्यात्मिक अनुभूति से भर देती है। श्रद्धालुओं का कहना है कि, इस धाम में प्रवेश करते ही ऐसा महसूस होता है मानो हर श्वास में शिव और हर धड़कन में ॐ का कंपन समाया हुआ हो।

12 महीने जल से भरा रहता है पवित्र कुंड

मंदिर में सेवा दे रहे ब्रह्मचारी मोहन डामर बताते हैं कि, यहां स्थित शिवकुंड वर्ष के बारहों महीने जल से भरा रहता है। यह कुंड वर्षों पुराना होने के बावजूद आज भी अपनी पवित्रता और प्राकृतिक स्वरूप को संजोए हुए है। सबसे अद्भुत बात यह है कि, यहां भगवान भोलेनाथ का 24 घंटे प्राकृतिक जलाभिषेक होता रहता है। जिसे श्रद्धालु भगवान की दिव्य कृपा मानते हैं। भक्त इस पवित्र कुंड का जल लेकर श्रद्धा पूर्वक शिवलिंग पर अर्पित करते हैं और परिवार की सुख-समृद्धि, स्वास्थ्य एवं मनोकामना पूर्ण होने की प्रार्थना करते हैं।

बाल हनुमान की प्रतिमा बढ़ाती है आस्था

मंदिर परिसर में स्थापित बाल हनुमान की प्रतिमा भी श्रद्धालुओं की विशेष आस्था का केंद्र है। यहां आने वाले भक्त पहले भोलेनाथ के दर्शन करते हैं, फिर बाल हनुमान के चरणों में शीश नवाकर अपने जीवन में सुख-शांति की कामना करते हैं। स्थानीय लोगों के अनुसार इस पवित्र कुंड में स्नान करने से मानसिक तनाव, थकान और नकारात्मक ऊर्जा दूर हो जाती है तथा व्यक्ति को आत्मिक शांति की अनुभूति होती है। ऐसी मान्यता है कि, सच्चे मन से यहां की गई प्रार्थना भगवान शिव अवश्य स्वीकार करते हैं।

सावन में देखते ही बनता है दिव्य नजारा

सावन माह में चेनपुरी शिवकुंड धाम का सौंदर्य अपने चरम पर पहुंच जाता है। चारों ओर फैली हरियाली, पहाड़ियों से बहता प्राकृतिक जल, ÷हर-हर महादेव÷ और ÷बम-बम भोले÷ के जयघोष, घंटियों की मधुर ध्वनि तथा शिवभक्तों का उत्साह पूरे वातावरण को भक्तिमय बना देता है। दूर-दूर से श्रद्धालु कठिन पहाड़ी रास्तों को पार कर इस धाम तक पहुंचते हैं। यहां जलाभिषेक कर भगवान भोलेनाथ से सुख, समृद्धि और परिवार की खुशहाली का आशीर्वाद मांगते हैं। श्रद्धालुओं का विश्वास है कि, सावन में यहां जल अर्पित करने वाले भक्तों की मनोकामनाएं अवश्य पूर्ण होती हैं।

प्रकृति और परमात्मा का होता है अद्भुत संगम

चेनपुरी शिवकुंड धाम केवल एक धार्मिक स्थल नहीं, बल्कि प्रकृति और अध्यात्म का अद्वितीय संगम है। पहाड़ियों का प्राकृतिक ॐ स्वरूप, बारहमासी जल से भरा पवित्र कुंड, भगवान भोलेनाथ का निरंतर प्राकृतिक जलाभिषेक और चारों ओर फैला मनमोहक प्राकृतिक सौंदर्य इस स्थान को झाबुआ जिले के प्रमुख आध्यात्मिक स्थलों में विशेष पहचान दिलाता है। जो भी श्रद्धालु एक बार इस दिव्य धाम के दर्शन करता है, वह यहां की अलौकिक अनुभूति और आध्यात्मिक ऊर्जा को जीवनभर नहीं भूल पाता। सावन के पावन अवसर पर यह धाम श्रद्धा, आस्था और प्रकृति की अनुपम छटा का ऐसा संगम प्रस्तुत करता है, जो हर शिवभक्त को बार-बार अपनी ओर आकर्षित करता है।

पुलिया पर कीचड़ होने से आने जाने वालों को परेशानी

माही की गूंज, आम्बुआ।

कस्बे के श्री राम मंदिर से बोरझाड सड़क मार्ग को जोड़ने वाले मार्ग पर बनी पुरानी पुलिया जीर्ण शीर्ण अवस्था में होने के कारण इस भरे कीचड़ युक्त पानी से होकर गुजरने वाले परेशान हो रहे हैं। इसे ऊंचा कर नवीन पुलिया निर्माण की मांग की जा रही है।

जानकारीनुसार श्री राम मंदिर एवं अंबे माता मंदिर के पास से गुजरने वाला मार्ग जोकि नाग मंदिर तथा मुस्लिम कब्रिस्तान के समीप से होता हुआ बोरझाड की ओर जाने वाले सड़क मार्ग को जोड़ता है के बीच नाली के ऊपर बनी पुरानी पुलिया जीर्ण शीर्ण हो रही है तथा कभी भी टूट सकती है। इस पुलिया पर से प्रतिदिन छोटे वाहन गुजरते हैं साथ ही बोरझाड पैदल जाने वाले एवं कब्रिस्तान जाने वाले तथा मंदिर की ओर आने जाने वाले सभी परेशान हो रहे हैं। पुलिया पर भरा कीचड़ से पैदल तथा दोपहिया वाहन निकले में परेशानी होती है। यह मार्ग आम्बुआ - बोरझाड के लिए कम दूरी का सीधा मार्ग माना जाता है। क्षेत्रीय नागरिकों की समाचार के माध्यम से मांग है कि इस पुलिया को अधिक ऊंचाई की निर्मित की जाए ताकि परेशानी से निजात मिल सके।

जिला एवं संभाग स्तरीय पर हुआ कराटे में चयन

माही की गूंज, काकनवानी। स्थानीय जीनियस पब्लिक स्कूल के छात्र-छात्राओं ने कराटे खेल में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर जिला एवं संभाग स्तरीय कराटे प्रतियोगिता के लिए स्कूल के कुल 11 बालक-बालिकाओं का चयन हुआ है। स्कूल से जिला स्तर पर खेलने गए खिलाड़ियों में भारती पंचाल, त्रिशा पंचाल, अनुष्का कुशवाह, जाह्नवी बारिया, पुलना बारिया, समर्थ पंचाल, आकाश डामोर, सुनील कटारा और सुमित डामोर शामिल हैं।

इनमें से अंडर-14 वर्ग में कक्षा 6 की छात्रा भारती अजय पंचाल और अंडर-19 वर्ग में कक्षा 11 के छात्र सुमित राजेश डामोर का चयन संभाग स्तरीय प्रतियोगिता के लिए हुआ है।

छः मौत के बाद सजकता: फोरलेन पर जांच शुरू

माही की गूंज, उज्जैन/बदनावर।

महाकाल दर्शन कर लौट रही छः जिंदगियां निगलने वाले रांग साइड हादसे के बाद आखिरकार फोरलेन की सुरक्षा व्यवस्था जांच के दायरे में आ गई। हादसे के दूसरे दिन सोमवार को धार से सहायक क्षेत्रीय परिवहन अधिकारी (एआरटीओ) हृदयेश यादव के नेतृत्व में टीम पंचकवासा पहुंची और घटनास्थल से लेकर आसपास के मार्ग का निरीक्षण किया।

वाहन चालकों के दिशा भ्रम वाले स्थानों को चिह्नित कर संकेतक, सावधानी बोर्ड और आवश्यक सुरक्षा इंतजाम करने के निर्देश दिए गए। अधिकारियों ने माना कि हादसे रोकने के लिए केवल वाहन चालकों पर कार्रवाई पर्याप्त नहीं, सड़क पर ऐसी व्यवस्था भी जरूरी है, जिससे गलत दिशा में जाने की स्थिति ही न बने।

निरीक्षण के दौरान एसडीएम प्रियंका मिमरोट, एसडीओपी अरविंदसिंह तोमर, तहसीलदार सुरेश नागर और टीआइ अमितसिंह कुशवाह मौजूद थे। दरअसल, रविवार को जामनगर से मशीनरी लेकर बदनावर के ग्राम बोराली स्थित फैक्ट्री जा रहा ट्राला निर्धारित टर्न से आगे निकल गया था। चालक को गलती का अहसास हुआ, तब तक वह बड़नगर की ओर जा चुका था। वापस लौटने के लिए ट्राला रांग साइड पंचकवासा की ओर दौड़ा और सामने से आ रही कार से भिड़ गया। हादसे में छः लोगों की मौत हो गई।

देर शाम मृतकों के स्वजन गुजरात से बदनावर सिविल अस्पताल पहुंचे, तो पूरा परिसर शोक में डूब गया। जिन अपनों के सकुशल लौटने की आस लेकर वे निकले थे, वे कफन में लिपटे सामने थे। यह दृश्य देखकर अस्पताल में मौजूद हर आंख नम हो गई।

तिरंगा यात्रा: कलेक्टर, एसपी ने हाथों में तिरंगा लेकर की सहभागिता

माही की गूंज, झाबुआ।

हर घर तिरंगा अभियान के तहत नगर पालिका परिषद झाबुआ द्वारा बुधवार को नगर में भव्य तिरंगा यात्रा का आयोजन किया गया। देशभक्ति के रंग में सराबोर इस यात्रा में कलेक्टर डॉ. योगेश तुकाराम भरसट एवं पुलिस अधीक्षक देवेंद्र पाटीदार ने हाथों में राष्ट्रीय ध्वज लेकर सहभागिता की और नागरिकों को राष्ट्रप्रेम, एकता एवं अखंडता का संदेश दिया।

तिरंगा यात्रा का शुभारंभ नगर पालिका परिषद झाबुआ से हुआ। हाथों में तिरंगा थामे जनप्रतिनिधि, अधिकारी-कर्मचारी एवं सफाई मित्र पूरे उत्साह के साथ यात्रा में आगे बढ़े। नगर के प्रमुख मार्गों से गुजरती हुई यात्रा राजवाड़ा चौक पहुंची, जहां इसका समापन हुआ। यात्रा के दौरान लहराते तिरंगे और ÷भारत माता की जय÷ के गगनभेदी जयघोष ने पूरे वातावरण को देशभक्ति से ओत-प्रोत कर दिया।

डिजिटल कंसेंट मैन्यूफेक्चरींग में फंसकर युवाओं को भ्रमित करता सोशल मीडिया का एल्गोरिदम

माही की गूंज, झाबुआ।

आईआईटी दिल्ली के 57वें दीक्षा समारोह में देश के प्रधानमंत्री ने छात्रों को संबोधित करते हुए कहा कि, दुनिया तेजी से बदल रही है और जब-जब बदलाव का दौर आता है तब-तब चुनौतियां भी आती है, और नए अवसर भी पैदा होते हैं। दुनिया बदलेगी तो टेक्नोलॉजी, इंड्रस्ट्रीस, और प्रोफेशन भी बदलेगें। लेकिन इसके बीच में मेरी बात याद रखिएगा, जो सीखेगा वो जीतेगा। जो नई चुनौतियों के नए समाधान खोजने का साहस दिखाएगा उसके लिए वहीं चुनौतियां अवसर में बदलती जाएगी। इस बात में सच्चाई है। वर्तमान में युवाओं के सामने डिजिटल प्लेटफार्म के एल्गोरिदम की चुनौतियां है जो युवाओं को भ्रम के मकड़जाल में फांसते हुए भ्रमित कर अपने पथ से भटका कर देश विरोधी जालसाजी में डुबो रही है।

रील्स के इस दौर में युवा अपने नए विचारों और भावनात्मक संतुलन को बनाने के लिए अपने मस्तिष्क को थोड़े समय के लिए भी फ्री नहीं कर पा रहे है जिससे कि, दिमाग डिजिटल लाइफ से कुछ समय के लिए रीयल लाइफ में रहते हुए स्वयं को व्यवस्थित कर सके। डिजिटल दुनिया में लगातार सक्रिय रहने की आदत मस्तिष्क को आराम का स्वभाविक अवसर नहीं देती। यहां तक की लत का दुष्प्रभाव इतना हो गया है कि, कोई भी व्यक्ति किसी अन्य की प्रतिक्षा बिना मोबाइल के कर भी नहीं सकता है। पल भर के लिए भी वह मोबाइल स्क्रीन से दूरी नहीं बनाना चाहता। लगातार स्क्रीन देखने से तनाव बढ़ता है और जब आंखों में थकान पुरी तरह से जम नहीं जाती सामान्य वयस्क मोबाइल स्क्रीन को त्यागता नहीं है। और उसके बाद दिमाग के साथ आंखों की नसे भी थक कर शिथिल हो जाती है और व्यक्ति को नींद आ जाती है। डिजिटल स्क्रीन के एल्गोरिदम में फंसते युवा रील्स के भंवर में अपनी पसंद को चुनते हुए एक ऐसे सोशल प्लेटफार्म के ऐसे ब्लेक होल में जा गिरते है जिसे कंसेंट मैन्युफेक्करींग कहा जाता है।

कंसेंट मैन्युफेक्करींग में व्यक्ति की सोच का निर्माण किया जाता है। विचारो और सोच का निर्माण करने वाले सोशल मीडिया के माध्यम से न्युज को इस तरह फिल्टर करते हुए पेश करते है कि, आम जनता वहीं सोचने लगती है जो उस विचार या सोच के निर्माणकर्ता चाहते हैं। इसके लिए लाठी चार्ज करने या किसी प्रकार से जबरदस्ती करने की आवश्यकता नहीं रहती है। प्रोपेगेंडा मॉडल की मुख्यधारा के अनुरुप खबर 5 फिल्टर से होकर गुजरती है।

पहलाः अपने कार्य में लाभ और उसकी रक्षा। दूसराः अपने विज्ञापन दाताओं को प्रसन्न रखना। तीसराः अपने मुख्य स्त्रोत से अपने पसंद की कहानी को चलाना। चौथाः अपने पक्ष में रहने का डर पैदा कर उसे बनाए रखना होता है, और पांचवाः यह कि जनता को अपने पक्ष में रखने के लिए अपने दुश्मन को भी जनता का दुश्मन बनाकर रखना होता है।

एल्गोरिदम किसी बड़े संपादक की तरह काम नहीं करता है बल्कि वह यह देखता है कि, कौन सा कंटेंट युजर्स को स्क्रीन पर टिकाए रखता है, ट्रोल आर्मी और फेक न्युज के जरिए इंटरनेट पर अपनी पसंद के नेरेटीव की बाढ़ सी ला देता है, और आपके लिए एक अलग ही दुनिया बना देता है।

अब इसका परिणाम यह होता है कि, आपको अपने फोन पर वह पसंद दिखाई देती है जिसे उस सोच को निर्माण करने वाले चाहते हैं और ध्रुवीकरण तेजी से बढ़ता है। इसी कारण डिजिटल भ्रम से भटके हुए युवा दूसरे पक्ष की बात कभी सून ही नहीं पाते। जिस तरह एल्गोरिदम को इस तरह डीजाइन किया जाता है कि, वह ऐसे कंटेंट को बढ़ावा दे जिससे गुस्सा, नफरत, सनसनी और डर पैदा करे। क्योंकि लोग इन्हें ज्यादा कमेंट्स करते है और शेयर भी करते हैं। इसी कारण कंसेंट मैन्युफेक्करींग शांति से सहमती बनाने तक सीमित नहीं रहा अब वह जनता में गुस्सा पैदा करने का जरिया भी बन गया है। एल्गोरिदम ने फेक न्युज, असीमित रील्स, की बाढ़ में इस तरह डुबो दिया है कि, जहां भ्रमित युवाओं को लगता है कि वे स्वतंत्र है, परंतु उनकी पसंद और सोच को बैकएंड कोडींग के जरिए चुपचाप कंट्रोल किया जा रहा है। उनको लगता है कि, वो जो चाह रहे है उसे देख रहे है लेकिन ऐसा नहीं होकर नफरत, सनसनी, डर, गुस्सा वाली सोच निर्माण करने वालों की चाह पर वो सबकुछ देख रहे होते हैं।

मेटा द्वारा भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की पोस्ट हटाना कोई तकनीकी खराबी नहीं बल्कि भारत की संप्रभुता के लिए एक बड़ी चेतावनी है क्योंकि इंटरनेट मीडिया कंपनियों के एकाधिकार है। युं तो फेसबूक से प्रधानमंत्री की पोस्ट कुछ देर के लिए हटाने पर मेटा द्वारा भारत सरकार से माफी मांग ली है। परंतु इतने में ही यह पूरा प्रकरण समाप्त नहीं हो जाता है। भारत में इंटरनेट मीडिया पर चलने वाले प्लेटफार्म्स के बारे में गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है और ठोस नीति बनाने की भी आवश्यकता है।

जंतर-मंतर पर छात्रों के नाम पर जो आंदोलन किया गया उसमें इंटरनेट प्लेटफार्म्स की जो भूमिका रही उस पर राष्ट्रव्यापी बहस की आवश्यकता है। सुप्रीम कोर्ट के मुख्य न्यायधीश की व्यग्यात्मक टिप्पणी के बाद अमेरिका में बैठे एक व्यक्ति ने काकरोच जनता पार्टी के नाम से इंस्टाग्राम हैंडल बनाया और 78 घंटे में 30 लाख फॉलोअर्स मिल गए। कुछ और समय में यह संख्या 2 करोड़ 20 लाख तक पहुंच गई। यह चिंतन का विषय है कि, इतने कम समय में आर्गेनिक तौर तरिके से क्या किसी को इतनी जल्दी इतने फोलोअर्स कैसे मिल सकते हैं!

रिकेश बैरागी

भारत में इंस्टाग्राम पर करीब 55 करोड़ सक्रीय युजर्स है इनमें सबसे बड़ी संख्या 24 वर्ष से 34 वर्ष तक के आयु वर्ग के लोग है। जिसके बाद 18 वर्ष से 24 वर्ष के आयु वर्ग के उपभोक्ता है। इसके अलावा भारत में फेसबूक के करीब-करीब 70 करोड़ यूजर्स और 85 करोड़ यूजर्स व्हाट्सअप का प्रयोग करते है। यह तीनों प्लेटफार्म मेटा कंपनी के अंतर्गत आते हैं, और मेटा अमेरिका की कंपनी है।

भारत में युवाओं को डिजिटल चुनौतियों को स्वीकार करते हुए उन समस्याओं को समझकर समाधान के नए साधनों को ढुंढना होगा। रील्स के इस भयानक और फेक दौर में अपने नए विचारों और भावनात्मक संतुलन को बनाए रखने के लिए डिजिटल ब्रेक लेने की जरुरत है। माना की डिजिटल दुनिया जीवन का हिस्सा बन गई है। परंतु मस्तिष्क को जिस शांत और खालीपन की आवश्यकता है उसके लिए स्क्रीन को तुरतं छोड़ने की जरुरत है। जिससे दिमाग अपने अवसर बना लेगा और मेरे भारत का युवा किसी भी कंसेंट मैन्युफेक्करींग के ब्लेक होल में गिरने से बचेगा।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक, अलका भटेवरा द्वारा काम्पेक प्रिन्टर्स प्रायवेट लिमिटेड, 3/54, प्रेस कॉम्प्लेक्स, ए. बी. रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 499, बाजना मार्ग, गणेश मंदिर के सामने, खवासा, तहसील थांदला, जिला-झाबुआ (म.प्र.) से प्रकाशित। प्रधान संपादक- संजय भटेवरा। मोबाइल नं. -95898-82798 (सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र झाबुआ रहेगा) आरएनआई नंबर- एमपीएचआईएन/2018/76422